Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 10 ● वर्ष : 13 ● रायपुर, बुधवार 18 जून 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

गर्भस्थ शिशु की हत्या महापाप है, शासन को इस पर रोक लगाना चाहिये।

To kill a child in mother's womb is a worst sin,Goverment should ban it.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

आज कैबिनेट की बैठक, होंगे महत्वपूर्ण फैसले

रायपुर (आरएनएस)। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में 18 जून को मुख्यमंत्री निवास में 18 जून को कैबिनेट की महत्वपूर्ण बैठक होगी। बैठक में मानसून के दस्तक देने पर खाद-बीज तथा सूखते बांधों के गिरते जलस्तर पर चर्चा होगी। मंत्रालय से मिली जानकारी के अनुसार 12 जुलाई को रखी गई थी। इसे बदलकर अब 18 जून कर दिया गया है। बैठक का कोई औपचारिक विवरण नहीं दिया गया है, लेकिन धान की खेती के लिए डीएपी खाद के संकट को देखते हुए वैकल्पिक खाद के प्रयोग पर ज्यादा ध्यान दिया जाएगा। इस समय किसान डीएपी खाद के लिए दर-दर भटक रहे हैं। विभिन्न सहकारी समितियों से इसका उठाव हो रहा है। राज्य में प्रमाणिक बीज का भी वितरण 5 हजार क्विंटल से ज्यादा किया जाएगा। खाद का कुल आबंटन का लक्ष्य 10 टन रखा गया है। राज्य में इस समय मार्कफेड के माध्यम से खाद का वितरण किया जा रहा है।

सड़क परिवहन और यातायात को सुरक्षित और सुगम बनाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता : मुख्यमंत्री साय

मुख्यमंत्री ने परिवहन सुरक्षा बेड़े में शामिल 48 वाहनों को झंडी दिखाकर किया रवाना

परिवहन विभाग के कर्मियों को सौंपी वाहनों की चाबी

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि हमारी सरकार सड़क परिवहन और यातायात को सुरक्षित और सुगम बनाने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। परिवहन और यातायात सुरक्षा में लगे उड़नदस्ता दल को 48 नवीन वाहनों की तैनाती से दुर्घटनाओं में निश्चित रूप से कमी आएगी, यातायात सुगम होगा और लोगों में ट्रैफिक नियमों के पालन को लेकर जागरूकता बढ़ेगी। श्री साय आज अपने निवास कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने इस मौके पर परिवहन विभाग के निरीक्षकों को इन वाहनों की चाबी सौंपी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि प्रदेश सरकार सड़क यातायात को सुरक्षित और सुगम बनाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। नवीन शासकीय वाहनों की मदद से परिवहन उड़नदस्ता दल नियमों का उल्लंघन करने वालों पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करेगी। उड़नदस्ता दल की कार्यक्षमता में वृद्धि, सड़क दुर्घटनाओं में कमी, सुरक्षा मानकों का बेहतर क्रियान्वयन और यातायात व्यवस्था में सुधार व अनुशासन बनाए रखने में यह पहल मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि इससे दूरदराज के क्षेत्रों में भी परिवहन दस्ते की निगरानी और पहुंच सुनिश्चित होगी।

ट्रैफिक नियमों का पालन करने की अपील : मुख्यमंत्री श्री साय ने हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग करने और ट्रैफिक नियमों का पालन कर दूसरों के जीवन की रक्षा करने की बात कही। उन्होंने कहा कि जनभागीदारी से ही हम एक सुरक्षित, संयमित और संवेदनशील सड़क परिवेश का निर्माण कर सकते हैं। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने लोगों से नशे की हालत में वाहन नहीं चलाने की अपील भी की।

अहमदाबाद विमान हादसे के बाद सुरक्षा सख्त, एयर इंडिया बोइंग ड्रीमलाइनर की 5 उड़ानें रद्द

नई दिल्ली (आरएनएस)। गुजरात के अहमदाबाद में 12 जून को बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर का एयर इंडिया एआई-171 विमान दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद सुरक्षा जांच सख्त हो गई है। मंगलवार को दिल्ली-पेरिस एआई-143 समेत एयर इंडिया की 5 अंतरराष्ट्रीय उड़ानें अचानक रद्द कर दी गईं। सभी उड़ानों को रद्द करने के पीछे तकनीकी कारण बताया गया है। सभी विमान बोइंग ड्रीमलाइनर थे। उड़ानों के रद्द होने से यात्री डरे हुए हैं, वहीं एयरलाइंस सुरक्षा कारणों का हवाला दे रही है।

मंगलवार सुबह खबर आई थी कि सैन फ्रांसिस्को से मुंबई आने वाली एयर इंडिया एआई-180 उड़ान को कोलकाता उतारने के बाद उसके बाएं इंजन में तकनीकी खराबी का पता चला। विमान जांच में 3 घंटे के अधिक समय लग गया, जिसके चलते यात्रियों को विमान से उतार दिया गया। इसके बाद अहमदाबाद से लंदन जाने वाली की एयर इंडिया की एआई-159 में उड़ान पूर्व जांच के दौरान तकनीकी गड़बड़ी पाई गई, जिसके बाद इसे भी रद्द कर दिया गया। इससे बाद दिल्ली से पेरिस जाने वाली एयर इंडिया एआई-143 उड़ान 17 जून को इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से रवाना होनी थी, लेकिन तकनीकी जांच में यह भी गड़बड़ पाई गई और इसे रद्द कर दिया। इसके बाद 18 जून को पेरिस के चार्ल्स डी गॉल (जीडीजी) हवाई अड्डे से दिल्ली आने वाली एआई-142 को भी तकनीकी कारणों से रद्द कर दिया गया।

लंदन-अमृतसर एयर इंडिया एआई-170 भी मंगलवार को अतिरिक्त एहतियाती जांच के कारण रद्द कर दी गई। एयर इंडिया ने मंगलवार को तकनीकी खराबी के कारण रद्द हुईं 5 उड़ानों को लेकर कोई बयान नहीं दिया, लेकिन अलग-अलग विमानों को लेकर यात्रा परामर्श जारी किया है। उसने यात्रियों को पैसे वापसी, होटल उपलब्ध कराने और वैकल्पिक सुविधा का विकल्प दिया। दिल्ली-पेरिस और अहमदाबाद-लंदन उड़ान के रद्द होने पर उसने तकनीकी समस्या की बात स्वीकारी है। लंदन-अमृतसर उड़ान रद्द होने पर उसने कहा कि हवाई क्षेत्र प्रतिबंधों और अतिरिक्त एहतियाती जांच के कारण विमान उपलब्ध नहीं हो सका।

सोमवार को हांगकांग-दिल्ली एयर इंडिया एआई-315 को तकनीकी समस्या के आधे रास्ते से ही लौटना पड़ा था। इसके अलावा लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे से चेन्नई आने वाली ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट (बीए-35) भी तकनीकी खराबी के कारण लौट गई। दोनों ड्रीमलाइनर विमान थे।

गुरुवार 12 जून को अहमदाबाद हवाई अड्डे से लंदन के लिए उड़ान भरने वाले बोइंग ड्रीमलाइनर एयर इंडिया एआई-171 कुछ सेंकेड में ही बीजे मेडिकल कॉलेज के छात्रावास से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे के समय विमान में 242 यात्री, 2 पायलट और 10 चालक दल के सदस्य सवार थे, जिसमें सिर्फ एक यात्री की जान बच सकी। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी की भी हादसे में मौत हो गई। जमीन पर करीब 30 लोगों की मौत हुई है। अहमदाबाद विमान हादसे के बाद बोइंग ड्रीमलाइनर को लेकर यात्रियों में डर बैठक गया है। एयर इंडिया के जिन विमानों में मंगलवार को तकनीकी खराबी आई है, वो सभी बोइंग के हैं, जिसमें 3 ड्रीमलाइनर हैं।

छत्तीसगढ़ विधानसभा का मानसून सत्र 14 जुलाई से, सत्र के दौरान होगी 5 बैठकें

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विधानसभा का मानसून सत्र 14 जुलाई से 18 जुलाई तक आहुत किया गया है। बैठक में खाद-बीज एवं खनिज माफिया सहित खाद संकट में मुख्य रूप से चर्चा होगी। विधानसभा के सचिव दिनेश शर्मा से मिली जानकारी के अनुसार मानसून सत्र में 5 बैठकें होगी। इसके लिए अधिसूचना आज जारी कर दी गई है। बैठक में अलग-अलग जिलों में अलग-अलग विभागों के प्रश्न पूछे जाएंगे। उन्होंने बताया कि विधायकों के अधिकांश सवाल ऑनलाईन के माध्यम से लिए जाते हैं तथा इन्हें स्वीकार किया जाता है। इसके लिए विधायकों एवं अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया है। राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ विधानसभा का पहला राजधानी के राजकुमार कॉलेज में हुआ था। इसके बाद बरोदा में संचालित हो रहा है। अगला विधानसभा सत्र नए भवन में लगेगा। इसमें 200 विधायकों की बैठने की व्यवस्था की जा रही है।

विपक्ष रहेगा हमलावर : मानसून सत्र में कांग्रेस हमलावर रहेगा। कांग्रेस द्वारा कानून व्यस्था, खाद-बीज संकट सहित खनिज माफियां को लेकर सरकार को घेरेगी। इधर राज्य सरकार कांग्रेस के हमलों का करार जवाब देने के लिए तैयारी कर रही है। शीघ्र ही भाजपा और कांग्रेस विधायक दल की बैठक बुलाई जाएगी। युक्तियुक्त करण तथा भाजपा सरकार के बड़े नाकामियों के साथ जनहित के मुद्दों को लेकर कांग्रेस हमलावर रहेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सार्थक एवं रक्षक अभियान का किया शुभारंभ

आयोग के 15 वें स्थापना दिवस पर पुलिस जवान, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और छात्राएं हुईं सम्मानित

बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने, राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की पहल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के 15 वें स्थापना दिवस समारोह के मौके पर बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने के लिए सार्थक एवं रक्षक अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर राजधानी रायपुर स्थित पंडित दीनदयाल आडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य के सुदूर अंचलों में बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि सार्थक एवं रक्षक जैसे नये अभियान जनमानस में बच्चों के अधिकारों के लिए जागरूक करने में कारगर सिद्ध होंगे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही सशक्त समाज का निर्माण हो सकता है। छत्तीसगढ़ राज्य के सुदूर अंचल खासकर बस्तर एवं सरगुजा संभाग में कम उम्र में ही बच्चे कामकाज की तलाश में अन्य शहरों के तरफ चले जा जाते हैं, पर जानकारी के अभाव में कई बार शोषण के शिकार हो जाते हैं। आयोग की जिम्मेदारी है कि ऐसे बच्चों का चिन्हांकन कर उन्हें रोजगार से जोड़ते हुए शासन की योजनाओं से लाभ दिलाया जाए। हमारी सरकार बच्चों और युवाओं पर केन्द्रित अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। हमारी सरकार गांव-गांव तक स्कूल, कॉलेज, कोचिंग की सुविधा मुहैया करा रही है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास, नालन्दा परिसर एवं दिल्ली में ट्राईबल यूथ हॉस्टल जैसे कार्यों के माध्यम से छात्रों को अधिक से अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती वर्णिका शर्मा ने आयोग की कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। गौरतलब है कि सार्थक अभियान बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने एवं रक्षक अभियान विश्वविद्यालयों में बाल अधिकार संरक्षण कानूनों की विशेष जानकारी प्रदान करने के लिए संचालित की जा रही है। आयोग के स्थापना दिवस समारोह में बाल अधिकारों की जागरूकता के लिए बेहतर कार्य करने वाले पुलिस के जवानों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं छात्राओं को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की नई मार्गदर्शिका बुकलेट, रक्षक बुकलेट एवं गुड टच, बेड टच सेफ टच, मानव तस्करी, एवं शिक्षा के अधिकार पर आधारित कार्टून पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

इस अवसर पर विधायक सर्वश्री सुनील सोनी, श्री पुरंदर मिश्रा, श्री गुरु खुशवंत साहेब, नागरिक आपूर्ति निगम अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव, वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ सलीम राज सहित अनेक जनप्रतिनिधि और आयोग से जुड़े संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

अहमदाबाद एयर इंडिया विमान दुर्घटना

101 शव परिजनों को सौंपे गए, 135 डीएनए मैच हुए

अहमदाबाद (आरएनएस)। अहमदाबाद में दुखद एयर इंडिया विमान हादसे के छठे दिन अहमदाबाद सिविल अस्पताल में डीएनए सैंपलिंग और मैचिंग का काम युद्धस्तर पर जारी है. इस संबंध में सिविल अधीक्षक डॉ. राकेश जोशी ने बताया कि अब तक 135 डीएनए मैच हो चुके हैं और 101 शव परिजनों को सौंपे गए हैं. अहमदाबाद सिविल अधीक्षक डॉ. राकेश जोशी ने बताया कि मंगलवार सुबह 10:45 तक 135 डीएनए मैच हो चुके हैं. वहीं, 101 शव परिजनों को सौंप दिए गए हैं. इसके अलावा 12 परिवार आज कुछ घंटों में यहां से शव लेकर जाएंगे. बीजे मेडिकल कॉलेज के 4 छात्रों की मौत हुई है. इसमें एक डॉक्टर सूरत का है जो अपनी बहन से मिलने आया था.

डॉ. राकेश जोशी ने आगे बताया कि डीएनए टेस्ट करना हमारी टीम के लिए बड़ी चुनौती है. शरीर के अंगों को देख पाना मुश्किल होता है, लेकिन टीम पूरी मेहनत से काम कर रही है. चूंकि डीएनए सैंपल मिलान और प्रक्रिया बहुत संवेदनशील है और इसमें कानूनी मामले भी जुड़े हैं. इसलिए इस प्रक्रिया को बहुत गंभीरता और तेजी से पूरा किया जा रहा है. जैसे-जैसे नतीजे आएंगे, प्रक्रिया में तेजी आएगी और समय भी कम लगेगा. डॉ. राकेश जोशी ने बताया कि डीएनए सैंपल लेने की प्रक्रिया जारी है, जांच भवन में डीएनए सैंपल की व्यवस्था की गई है. जब परिजन शव स्वीकार करने आएंगे, तो उन्हें आवश्यक प्रमाण पत्र और अन्य दस्तावेज प्रक्रिया जल्दी पूरी करने के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से विभिन्न जरूरी व्यवस्थाएं की गई हैं.

जिन्दल स्टील एंड पावर को कृषि प्रोत्साहन व बुजुर्ग कल्याण के लिए ग्रीनटेक अवार्ड

रायपुर (विश्व परिवार)। जाने-माने उद्योगपति और कुरुक्षेत्र से सांसद नवीन जिन्दल के नेतृत्व वाली कंपनी जिन्दल स्टील एंड पावर को कृषि प्रोत्साहन और वरिष्ठ नागरिक कल्याण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ग्रीनटेक अवार्ड-2025 से सम्मानित किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर हुए सामाजिक कार्यों के मूल्यांकन के बाद 14 जून को नई दिल्ली में आयोजित एक सम्मान समारोह में कंपनी को उपरोक्त दोनों ही क्षेत्रों में सराहनीय योगदान के लिए ये दोनों सम्मान प्रदान किये गए, जो श्रीमती शालू जिन्दल के नेतृत्व वाले जिन्दल फाउंडेशन के माध्यम से समाज में व्यापक और सकारात्मक बदलाव लाने के जेएसपी के व्यापक दृष्टिकोण का परिचायक है।

जिन्दल फाउंडेशन की चेयरपर्सन श्रीमती शालू जिन्दल ने इस अवसर पर कहा, इन दोनों ग्रीनटेक पुरस्कारों को पाकर हम गौरवान्वित हैं। यह सम्मान हमें पंक्ति के आखिरी व्यक्ति तक विकास की लौ पहुंचाने की हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है। चाहे किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक उपलब्ध कराना हो या बुजुर्गों के लिए गौरव और सम्मान का वातावरण तैयार करना, हमारे सभी प्रयास सेवा भावना से प्रेरित हैं। यह पुरस्कार मैं अपनी टीम और उन जुझारू समुदायों को समर्पित करती हूं, जिनके साथ हम निरंतर काम कर रहे हैं। दोनों क्षेत्रों में मिले सम्मान के लिए उन्होंने निर्णायक मंडल का भी आभार व्यक्त किया।

कृषि प्रोत्साहन के लिए मिला पुरस्कार इस बात की पहचान है कि जिन्दल फाउंडेशन ने गांवों और आदिवासी क्षेत्रों में किसानों को आगे बढ़ाने के लिए अच्छा काम किया है। फाउंडेशन ने अब तक 25, 000 से अधिक किसानों को जैविक खेती, पानी की बचत वाली सिंचाई, खेती के नए उपकरणों के प्रयोग और मिट्टी की अच्छी सेहत बनाए रखने की ट्रेनिंग दी है। इससे किसानों की फसल का उत्पादन बढ़ा, आमदनी बढ़ी और साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिला।

हाल ही में, अंगुल जिले में किसानों के लिए मोबाइल सॉइल टेस्टिंग लैब की शुरुआत शालू जिन्दल ने की, जो नवीन जिन्दल के दृष्टिकोण पर आधारित प्राकृतिक खेती के मिशन का अगला चरण है। जिन्दल फाउंडेशन की वाटरशेड विकास परियोजना और बाड़ी कार्यक्रम की तो अनेक राष्ट्रीय मंचों पर सराहना की गई है।

वरिष्ठ नागरिक कल्याण के लिए मिला ये पुरस्कार इस बात का सबूत है कि जिन्दल स्टील एंड पावर बुजुर्गों के मान-सम्मान और उनकी देखभाल को अपना दायित्व मानती है। जिन्दल फाउंडेशन की मोबाइल हेल्थ क्लिनिक, डे-केयर सेंटर, घर-घर जाकर दी जा रही स्वास्थ्य सेवाएं और मानसिक सेहत के लिए परामर्श जैसे कार्यक्रम विशेष रूप से गांवों में रहने वाले हजारों बुजुर्गों के लिए लाभकारी साबित हुए हैं। इन पहलों से बुजुर्गों के स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और सामाजिक जुड़ाव में सुधार हुआ है।

फाउंडेशन जरूरतमंद बुजुर्गों के पोषण और देखभाल के लिए विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी कर रहा है और शीघ्र ही जिन्दल अपना घर के नाम से एक आधुनिक सुविधा-संपन्न वृद्धाश्रम की स्थापना करने जा रहा है, जहां वरिष्ठ नागरिक गरिमापूर्ण और स्वस्थ जीवन जी सकेंगे।

इन दो ग्रीनटेक पुरस्कारों के माध्यम से जेएसपी और जिन्दल फाउंडेशन ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि इनोवेशन और समावेशन को साथ लेकर चलने वाली उनकी सोच, भारत में सामाजिक परिवर्तन की एक प्रेरक शक्ति है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कनाडा में जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कनाडा में जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए पहुंचे हैं। यह एक दशक में कनाडा की उनकी पहली यात्रा है। जी7 शिखर सम्मेलन पहला बहुपक्षीय कार्यक्रम है जिसमें मोदी ऑपरेशन सिंदूर के समापन के बाद भाग लेंगे। यह ऑपरेशन पिछले महीने पाकिस्तान में आतंकी शिविरों पर भारत द्वारा किया गया था। यह हमला पहलगाम आतंकी हमले के बाद हुआ था जिसमें 26 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे। तीन देशों की यात्रा पर गए मोदी कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी के निमंत्रण पर साइप्रस से सोमवार शाम (स्थानीय समयानुसार) कनाडा पहुंचे।

कनानास्किस में प्रधानमंत्री की यह जी7 शिखर सम्मेलन में लगातार छठी भागीदारी है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वह वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं पर भी जोर देंगे। यह यात्रा उनकी तीन देशों की आधिकारिक यात्रा का हिस्सा है, जिसकी शुरुआत साइप्रस से हुई और इसका समापन क्रोएशिया से होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए कनाडा के कैलगरी में उतरा हूं। शिखर सम्मेलन में विभिन्न नेताओं से मिलूंगा और महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर अपने विचार साझा करूंगा। वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं पर भी जोर दूंगा।

इस शिखर सम्मेलन पर पैनी नजर रखी जा रही है, क्योंकि यह इजरायल-ईरान और रूस-यूक्रेन के बीच बढ़ते संघर्ष की पृष्ठभूमि में आयोजित किया जा रहा है। मोदी के अलावा, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की अल्बर्टा के कनानास्किस में होने वाले शिखर सम्मेलन में अतिथियों में शामिल होंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कनाडा में जी7 शिखर सम्मेलन से एक दिन पहले वाशिंगटन लौट आएंगे, ताकि कई महत्वपूर्ण मामलों पर ध्यान दिया जा सके।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, बुधवार 18 जून 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

मोर संगवारी सेवा घर-घर पहुंचा रही अपनी सेवा

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई अंतर्गत नागरिकों को शासकीय योजनाओं का लाभ देने मोर संगवारी सेवा योजना संचालित है। इस योजना के माध्यम से भिलाई के नागरिक घर बैठे टॉल फ्री नबंर 14545 पर कॉल कर मोर संगवारी के एजेंट से आवश्यकता के अनुरूप प्रमाण पत्र बनवा सकते है। मोर संगवारी सेवा योजना के माध्यम से नागरिको को 27 प्रकार की सुविधाओं का लाभ प्रदान किया जाता है। जैसे विवाह प्रमाण पत्र 2974, मृत्यु प्रमाण पत्र 1580, जन्म प्रमाण पत्र 2492, दुकान एवं स्थापना पंजीयन/गुमस्ता लाइसेंस 355, 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों का आधार पंजीयन 12966, पैन कार्ड सेवा 271, आधार मोबाईल नबंर अपडेट 13692, मूल निवासी प्रमाण पत्र 1369, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति प्रमाण पत्र 61, पिछड़ा वर्ग प्रमाण पत्र 284, आय प्रमाण पत्र 3437, एपीएल राशन कार्ड 277, विवाह सुधार 139 इस प्रकार कुल 42586 प्रमाण पत्र बनाकर नागरिकों को लाभान्वित किया जा चुका है।

रायपुर नाका मुक्तिधाम में चल रहे उन्नयन व सुंदरीकरण कार्य का निरीक्षण करने महापौर टीम के साथ पहुँची

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत वार्ड 60 रायपुर नाका में स्थिति मुक्तिधाम का निरीक्षण महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने वार्ड पार्षद सहित लोक कर्म प्रभारी देवनारायण चन्द्राकर के साथ मौके पर उपस्थित ठेकेदार को जल्द ही कार्यो को पूरा करने को कहा गया।उन्होंने कहा कि मुक्तिधाम क्षेत्र स्थल पर बाउंड्रीवाल के किनारे-किनारे चारो तरफ छायादार पौधे रोपण करने के निर्देश दिए।साथ ही मुक्तिधाम में बेहतर साफ सफ़ाई करने, गाजर घास को काटने के लिए भी निर्देश दिए गए।इस दौरान प्रभारी देवनारायण चंद्राकर, देवनारायण तांडी, अरुण सिंह, शिवेंद्र परिहार, रंजिता पाटिल, निखिल खिचरिया, सहायक अभियंता संजय ठाकुर, उपअभियंता पंकज साहू के अलावा ठेकेदार उपस्थित रहे। रायपुर नाका मुक्तिधाम में चल रहे उन्नयन व सुंदरीकरण कार्य का निरीक्षण करने महापौर श्रीमती अलका बाघमार टीम के साथ पहुँची।उन्होंने प्रतीक्षा शेड व दाह संस्कार के लिए शेड मरम्मत का निर्माण किया जाना है, यह कार्य प्रगति पर हैं। इस कार्य के लिए 24 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई है।

संपीड़ित बायो गैस प्लांट निर्माण का स्थल निरीक्षण करने पहुंचे आयुक्त

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा जोन क्रं. 02 वैशाली नगर अंतर्गत डामरीकृत रोड एवं सी.बी.जी. प्लांट निर्माण स्थल का निरीक्षण करने पहुंचे। वार्ड क्रं. 24 हाउसिंग बोर्ड में रोड का नया डामरीकरण का कार्य कराया जा रहा है, जिसका फाईनल कोटिंग बारिश से पूर्व सूखे मौसम में कराने उप अभियंता को निर्देशित किये, जिससे नागरिको के आवागमन में किसी प्रकार की समस्या न हो। सुन्दर विहार स्थित खसरा नम्बर 1423 में भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड (बी.पी.सी.एल.) भारत सरकार के तहत संपीड़ित बायो गैस (सी.बी.जी.) प्लांट का निर्माण किया जाना है, निर्माण से पूर्व स्थल का निरीक्षण किया गया। प्लांट में घरो से निकलने वाले गीला कचरा, ठोस अपशिष्ट एवं अन्य अपशिष्ट पदार्थो के माध्यम से बायो गैस एवं जैविक खाद का उत्पादन किया जायेगा।

शहर में होर्डिंग और पोस्टर की लगातार चोरी की घटनाओं पर रोक लगाने महापौर ने दिए सख्त कार्रवाई करने निर्देश

महापौर ने अज्ञात चोरों के खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत शहर के चौक चौराहों में लगे बधाई, शुभकामनाएं के लगने के दूसरे दिन होर्डिंग, फ्लैक्स व पोस्टर की लगातार चोरी की घटनाओं पर रोक लगाने की शिकायत को लेकर महापौर श्रीमती अलका बाघमार से की गई।बैठक में एमआईसी सदस्य नरेंद्र बंजारे, देवनारायण चन्द्राकर, शेखर चन्द्राकर, बाजार अधिकारी शुभम गोइर के अलावा अन्य मौजूद रहे। इस दौरान महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने चोरी की वारदात को गंभीरता से लेते हुए विभागीय अधिकारियों की बैठक लेकर कहा कि नगर निगम क्षेत्र में लगने वाले होर्डिंग, फ्लैक्स की चोरी लगातार बढ़ती जा रही है जिसकी शिकायत मिली है।

आज बैठक में महापौर श्रीमती अलका बाघमार द्वारा विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया की जन्मदिन, शुभ कार्यों व आयोजनों को लेकर आम जनों सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा लगाए जाने वाले होर्डिंग व पोस्टर, फ्लैक्स की सुरक्षा व चोरी की शिकायत के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। उन्होंने ये भी कहा कि आवश्यकता पड़ने पर अज्ञात चोरों के खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए। बीते कुछ दिनों से नगर निगम क्षेत्र के मुख्य मार्ग व नगर निगम गौरव पथ के विद्युत पोल व निर्धारित स्थलों में लगे बधाई फ्लैक्स, पोस्टर लगातार चोरी हो रहे हैं। जिसे रोकने के लिए महापौर ने कठोर कदम उठाने के निर्देश दिए है।

एस.एल.आर.एम. सेंटर को कंप्लीट करने 30 जून तक मोहलत

पार्षद ने असमाजिक तत्वों की आवाजाही रोकने गेट लगाने की मांग की

रिसाली (विश्व परिवार)। मैत्रीकुंज वार्ड 22 में निर्माणाधीन कचरा पृथक्करण केन्द्र (एस.एल.आर.एम.) को पूर्ण करने आयुक्त मोनिका वर्मा ने अंतिम मोहलत दी है। उन्होंने निर्माण एजेंसी को हर हाल में 30 जून तक कार्य पूर्ण करने कहा। आयुक्त मोनिका ने मॉर्निंग विजिट के दौरान पार्षद रमा साहू से चर्चा भी की।

निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने पाया कि कचरा पृथक्करण केन्द्र में रैंप, शौचालय और बिजली का कार्य अधूरा है। निर्माण एजेंसी ने कार्य भी बंद कर दिया है। वहीं दूसरी ओर कार्य बंद होने की वजह से एस.एल.आर.एम. सेंटर में असमाजिक तत्वों के जमावड़ा होने की शिकायत स्थानीय पार्षद रमा साहू ने आयुक्त से की। मंगल भवन में तोड़ फोड़ होने का खुलासा की। इस पर आयुक्त ने मंगल भवन के पीछे खाली जमीन पर दीवार खड़ी करने और प्रधानमंत्री आवास वाले कैंपस में ऊंचा गेट लगाने निर्देश दी। इस दौरान सहायक अभियंता अखिलेश गुप्ता, प्रभारी उपअभियंता गोपाल सिन्हा, जनस्वास्थ्य विभाग के प्रभारी अधिकारी बृजेन्द्र परिहार आदि उपस्थित थे।

आयुक्त मोनिका वर्मा ने वार्ड 4 रूआबांधा पूर्व का भ्रमण की। भ्रमण के दौरान एम.आई.सी. सदस्य व वार्ड पार्षद ममता यादव ने छत्तीसगढ़ सब्जी मार्केट के आस-पास क्षेत्र में व्यापारियों द्वारा गंदगी फैलाने की जानकारी दी। आयुक्त मोनिका वर्मा ने व्यापारियों से खुले में कचरा नहीं फेकने की हिदायत दी। साथ ही उन्होंने दोबारा गलती करने पर जनस्वास्थ्य विभाग को जुर्माना वसूलने निर्देश दिए।

वार्ड 6 रूआबांधा सेक्टर भ्रमण के दौरान वार्ड पार्षद शीला नारखेड़े ने मैदान में पानी भरने की शिकायत की। स्थल निरीक्षण के बाद आयुक्त ने अधिकारियों को सर्वे कर पानी निकासी करने प्लान तैयार करने के निर्देश दिए। वहीं मंदिर के आस-पास छुटे हुए क्षेत्र में पेवर ब्लाक लगाने के लिए प्रस्ताव तैयार करने भी कहा।

कृषि विभाग द्वारा किया गया आदान विक्रय केंद्रों का निरीक्षण

कालाबाजारी करने वालों पर सख्त कार्यवाही की हिदायत

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देशानुसार जिले के कृषकों को गुणवत्तायुक्त कृषि आदान जैसे उर्वरक, बीज एवं कीटनाशक दवाई उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कृषि विभाग में पदस्थ निरीक्षकों द्वारा लगातार छापामार की जा रही है। इसी क्रम में सोमवार को जिले के विभिन्न विकासखंडों में निरीक्षकों द्वारा कीटनाशक उर्वरक विक्रय केंद्रों का निरीक्षण किया गया तथा विक्रय केंद्रों को नियमानुसार उर्वरक, बीज एवं कीटनाशक विक्रय करने हेतु समझाइश दी गई। किसी भी स्थिति में कालाबाजारी न करने हेतु स्पष्ट निर्देश दिए गए। विकासखंड बलौदा बाजार के ग्राम सरखोर में संचालित साईं कृषि केंद्र, अक्षांश ट्रेडर्स एवं इंद्र कृषि केंद्र, विकासखंड भाटापारा में साहू कृषि केंद्र तरेंगा तथा विकासखंड कसडोल में रवि कृषि केंद्र तथा मनीष कृषि केंद्र टुंडरा का निरीक्षण किया गया एवं आवश्यक निर्देश दिए गए।

आम सूचना- सीमांकन सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि भूमि स्वामी श्रीमती मेघना जैन पति श्री शैलेंद्र जैन निवासी देवेंद्र नगर सेक्टर 5 रायपुर का ग्राम उरला, तहसील धरसीवां 1, जिला रायपुर स्थित खसरा क्रमांक 308/3 का सीमांकन दिनांक 18.06.2025 समय 12:00 बजे किया जाएगा। अतएव उक्त भूमि का सीमांकन हल्का पटवारी की उपस्थिति में किया जाएगा, उक्त खसरा नंबर के संबध में जो भी उजर, दावा, अथवा आपत्ति हो तो उक्त दिनांक एवं समय तक हल्का पटवारी के समक्ष उनके कार्यालय में प्रस्तुत करें। आपकी अनुपस्थिति में सीमांकन कार्य किया जा सकता है। सीमांकन उपरांत किसी प्रकार की कोई आपत्ति मान्य नहीं होगा।

सो सूचना जाने।

श्रीमती मेघना जैन
निवासी देवेंद्र नगर सेक्टर 5, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है, कि सामान्य आवास योजनांतर्गत **पिरदा रायपुर,** स्थित **भवन क्रमांक एच.आई.जी.-19 श्री रणजीत सिंह बख्शी पिता श्री बख्शीस सिंह,** के नाम से आबंटीत किया गया। आबंटी द्वारा दिनांक **17.11. 2021** को लीजडीड पंजीकृत कर, पूर्ण मूल्य जमा कर इस कार्यालय के पत्र क्रमांक **792** दिनांक **28.02.2025** के माध्यम से आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया। वर्तमान में आबंटी, **श्री रणजीत सिंह बख्शी पिता श्री बख्शीस सिंह निवासी 203 पाउ गली, तालब घेरा, गंगा नगर वार्ड क्रमांक-23 जगदलपुर जिला बस्तर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को **श्री प्रेमकांत प्रसाद पिता श्री स्व. श्री श्यामू प्रसाद निवासी- एम.आई.जी. डुप्लेक्स 169, फेस-4 कबीर नगर रायपुर तह.व जिला रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र **(एन.ओ.सी.)** प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन के **विक्रय के संबंध** में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.), फोन नं.-0771-2991574
email Id- eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी **बोरियाकला, जिला रायपुर,** में स्थित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित **फ्लैट क्र. एल.आई.जी -423, ब्लॉक-27 प्रथम तल कंकन बासु पिता श्री मदन मोहन बासु निवासी- दावडा कॉलोनी लक्ष्मी नगर, रायपुर पचपेडी नाका रायपुर तह व जिला-रायपुर (छ.ग.)** के नाम पर इस कार्यालय के आंबटन आदेश क्र. **1821** दिनांक **04.05.2010** के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आंबटित है। आबंटी द्वारा फ्लैट का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक **22.09.2011** को लीजडीड निष्पादित कराने के उपरांत पत्र क्रमांक **2555** दिनांक **28.03.2012** को आधिपत्य आदेश जारी किया गया है। आंबटी **कंकन बासु पिता श्री मदन मोहन बासु,** उक्त फ्लैट को **विक्रय अनुमति** हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त फ्लैट को क्रेता **श्री गुरमीत सिंह पिता श्री अमरजीत सिंह निवासी- 16, वार्ड नं.-48, गुरुद्वारा श्री गुरु अमरदास जी निवास देवपुरी रायपुर तह व जिला रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन/ फ्लैट के विक्रय करने हेतु अनुमति प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय जोन क्रमांक-3 नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)
:: निविदा आमंत्रण सूचना ::

क्रमांक 09/न.पा.नि./ जोन-03/2025-26 — रायपुर, दिनांक 16.06.2025

मैनुअल पद्धति निविदा आमंत्रित की जाती है :-

01. निविदा प्रपत्र हेतु आवदेन तिथि - 01.07.2025 कार्यालयीन समय 5:00 बजे तक
02. निविदा प्राप्त करने की तिथि - 02.07.2025 कार्यालयीन समय 5:00 बजे तक
03. निविदा जमा करने की तिथि - 08.07.2025 कार्यालयीन समय 4:00 बजे तक
04. निविदा खोलने की तिथि - 08.07.2025 कार्यालयीन समय 5:00 बजे तक

कार्य का विवरण निम्नानुसार है :-

क्र.	कार्य का नाम	आगणति राशि (लाख में)	अमानती राशि	निविदा प्रपत्र मूल्य	ठेकेदार की श्रेणी	प्रपत्र एवं एस.ओ. आर का विवरण	समयावधि	मद
1	कालीमाता वार्ड क्र. 12 अंतर्गत तरूण नगर, कुष्ठ बस्ती, खपराभट्ठी सहित अन्य आवश्यक स्थानों पर सड़क, नाली एवं पुलिया संधारण कार्य।	3.93	4000/-	750/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'अ' (पी. डब्ल्यू.डी. भवन दिनांक 01.01. 2015 संशोधित एस.ओ.आर)	02 माह	संधारण मद
2	कालीमाता वार्ड क्र. 12 अंतर्गत बालाजी उद्यान में पोताई, पेंटिंग एवं अन्य संधारण कार्य।	3.00	3000/-	750/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'अ' (पी. डब्ल्यू.डी. भवन दिनांक 01.01. 2015 संशोधित एस.ओ.आर)	02 माह	संधारण मद
3	कालीमाता वार्ड क्र. 12 अंतर्गत लोधीपारा स्थित शासकीय नेताजी प्राथमिक शाला एवं आंगनबाड़ी केन्द्र में आवश्यक मरम्मत संधारण कार्य।	3.94	4000/-	750/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'अ' (पी. डब्ल्यू.डी. भवन दिनांक 01.01. 2015 संशोधित एस.ओ.आर)	02 माह	संधारण मद
4	कालीमाता वार्ड क्र. 12 अंतर्गत विभिन्न स्थानों में गार्डनों में आर.सी. चेयर लगाने का कार्य।	2.76	3000/-	750/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'स' (नॉन एस.ओ.आर)	02 माह	पार्षद निधि
5	मदर टेरेसा वार्ड क्र. 47 अंतर्गत बी. एस.यू.पी. कॉलोनी में स्लूस वॉल्व संधारण एवं 2' पाईप लाईन मरम्मत एवं अन्य संधारण कार्य।	3.75	4000/-	750/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'अ' (पी.एच.ई दिनांक 01.06. 2020 संशोधित एस.ओ.आर)	02 माह	संधारण मद
6	गुरु घासीदास वार्ड क्र. 48 अंतर्गत विभिन्न स्थानों में चेम्बर लगाने का कार्य।	1.99	2000/-	300/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'अ' (पी. डब्ल्यू.डी भवन दिनांक 01.01. 2015 संशोधित एस.ओ.आर)	02 माह	संधारण मद
7	जोन क्रमांक-03 क्षेत्रांतर्गत आवश्यक स्थानों में स्टोन डस्ट/ मुरूम गिराकर रोड में संधारण कार्य।	1.97	2000/-	300/-	'डी' एवं इससे ऊपर	प्रपत्र 'अ' (पी. डब्ल्यू.डी भवन दिनांक 01.01. 2015 संशोधित एस.ओ.आर)	02 माह	संधारण मद

1. निविदा के दस्तावेज रजिस्टर्ड पोस्ट / स्पीड के माध्यम से प्रस्तुत करना होगा।
2. कार्य से संबंधित अन्य जानकारी एवं शर्तें कार्यालयीन दिवस में जोन क्रमांक 03 नगर पालिक निगम, रायपुर कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
3. संचालनालय, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग की ई-मेल आई.डी. datacenter.uad.cg@nic.in आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है।
4. उक्त निविदा नगर पालिक निगम, रायपुर के वेबसाईट nagarnigamraipur.nic.in में देखी जा सकती है।

घरों से निकलने वाले गीला और सूखा कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देवें।

जोन आयुक्त
जोन क्रमांक-03
नगर पालिक निगम रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /21714/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 16-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21714
वार्ड का नाम- 2 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 2 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802I01273** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ANUPAMA PITAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MICHEL PITAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SRINIVASA RAO PAMULA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **APPA RAO PAMULA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./21393/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 10-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21393
वार्ड का नाम- 3 - संत कबीर दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 3 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR803I0286K** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VIKRAM AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOPAL PRASAD AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUNITA GAUTAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O HARSHMANI GAUTAM** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./21444/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 17-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21444
वार्ड का नाम- 58 श. पंकज विक्रम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 58 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR650A0045** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SOMEN KUMAR CHATERJEE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O DEVRANJAN CHATERJEE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. किशन लाल कच्छावा 2. आरती कच्छावा** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता- स्व. नेमीचंद कच्छावा 2. पति- किशन लाल कच्छावा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21716/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 17-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21716
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR223N00102** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **NARESH JADHWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O POPATMAL JADHWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANIL KUMAR JADWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O NARESH JADWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21660/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 17-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21660
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737A00068** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SUNDAR LAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHOBHARAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. भगवती साहू 2. पुष्पा साहू 3. नारायणी साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. श्री सुन्दर लाल साहू 4. श्रीमती नंदनी साहू- पुत्र ना.बा. मोनाक्ष साहू, पुत्री- ना.बा. रूद्राणी साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि हितग्राही **01. श्री नीलकंठ सिंह ठाकुर पिता स्व. श्री जय सिंह ठाकुर 02. श्री प्रभुशरण सिंह ठाकुर पिता श्री नीलकंठ सिंह ठाकुर** को **भवन/भूखण्ड क्रमांक एम.आई.जी. डिलक्स-183, फेस-2, कबीर नगर, रायपुर** में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, द्वारा आबंटित हैं, हितग्राही द्वारा आवासीय भूखण्ड/ भवन को **फ्री होल्ड** अधिकार में संपरिवर्तन हेतु निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया हैं। इस संबंध में यदि किसी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से **15 दिवस** के अंदर मय दस्तावेज, अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./21769/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 17-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21769
वार्ड का नाम- 61 श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 61 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी- आई.डी.-**RPR663R00867** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SUDEB SANYAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHAILESH SANYAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **CHHOTI PALI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O RAJESH PALI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./21784/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 17-06-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 21784
वार्ड का नाम- 61 श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 61 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी- आई.डी.-**RPR663M00119** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAMESH KURRE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JASAL KURRE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RAJNI BAI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O RAJAN KUMAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **DEATH CERTIFICATE**/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर बुधवार 18 जून 2025

किसानों को रात रात भर करने पड़ता है रात जगा फिर भी उन्हें नहीं मिलता खाद

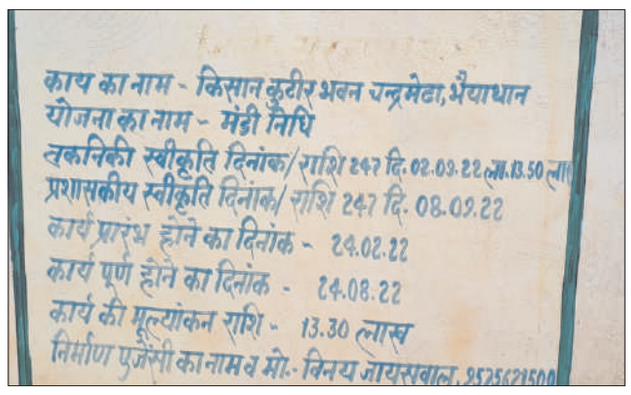

समिति प्रबंधक धर्मेंद्र कुशवाहा

खाद का पर्याप्त स्टॉक नहीं वितरण मे धांधली से किसान परेशान

किसानों में भारी आक्रोश जिला प्रशासन से पर्याप्त स्टॉक की कि मांग

गौपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–शासन स्तर पर खाद की सप्लाई कम होने से जहां किसान परेशान है वहीं जिनके ऊपर खाद वितरण की जिम्मेदारी है उनके द्वारा भी खाद वितरण में धांधली करने की वजह से किसानों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है तथा किसान समिति का चक्कर लगाने पर मजबूर है किसानों मे इसको लेकर भारी आक्रोश है। कुछ जगह समिति के प्रबंधको तथा कर्मचारीयों की मिली भगत से चुनिंदा किसानों को पहले खाद उपलब्ध कराने की शिकायत सामने आई है। जिसका किसानों ने विरोध किया है तथा प्रशासन से मांग किया है कि सभी समितियों मे खाद्य तथा यूरिया उपलब्ध कराया जाए, खाद, यूरिया वितरण में पारदर्शी तरीका अपना करके सभी किसानों को जल्द से जल्द खाद्य उपलब्ध कराया जाए जिससे कि वो आसानी से खेती किसानी कर सके। किसानों का समय खेत से ज्यादा समिति के सामने चक्कर काटने में बीत रहा है।

खाद तथा यूरिया के वितरण में भारी अनिमित्ता का मामला भटगांव तहसील अंतर्गत चंद्रामेढ़ा समिति मे आया है जहां सैकड़ो किस प्रतिदिन लाइन लग रहे हैं तथा बिना खाद लिए वापस जा रहें है। आदिम जाति सेवा सहकारी समिति चंद्रामेढ़ा मे 22 गांव के लगभग 1200 किसान पंजीकृत है तथा वहीं से सभी किसानों को शासन के द्वारा प्रदत्त यूरिया और रखाड़ खाद प्रदान होना है। खाद प्राप्त करने के लिए समिति का चक्कर काट रहे किसानों का आरोप है कि उनके द्वारा लगातार चार सोमवार से समिति का चक्कर लगाया जा रहा है। कुछ चुनिंदा लोगों को का खाता हम लोग के आने से पहले जमा हो जाता है तथा न जाने कैसे उनका नंबर लग जाता है और वे लोग खाद प्राप्त करके चल जाते है। जबकि चार,पांच बजे भोर से लाईन लगे बाकी किसानों को यूरिया खाद लिए बिना खाली हाथ लौटना पड़ता है।

ग्राम पंचायत रैसरा के किसान राम रूप साय ने कहा कि जब समिति 10 बजे खुलता है तो रात में कौन कार्ड जमा कर लेता है समिति के कर्मचारियों की मिली भगत होगी। डांड अमोरनी के किसान मदन कुमार राजवाडे का कहना है कि पिछले 4 सोमवार से वह समिति में आ रहा है लाइन लग रहा है पर उसका नंबर नहीं आ रहा और कहां जाता है कि कल फिर आना। इसी तरह किसान दिलीप कुमार पैकरा, इंद्रजीत यादव सहित सैकड़ो की संख्या में उपस्थित किसानों ने समिति प्रबंधक तथा कर्मचारियों पर गंभीर आरोप लगाया कि हम लोग सुबह चार पांच बजे भोर से समिति के गेट पर लाइन लगाए हुए हैं। जब समिति खुला तो देख रहे हैं कि अंदर में दो बंडल खाता पहले से ही जमा है। जिनको ही खाद देने की बात कर्मचारी कर रहे हैं तथा हमें वापस लौटा रहे हैं और कह रहे हैं कि कल आना। किसानों का आरोप है कि चार सोमवार से इसी तरह चल रहा है। लोग लाइन लग रहे हैं और उन्हें कल आना कल आना का आश्वासन मिल रहा है खाद नहीं मिल रहा। मानसून सर पर है किसानों को खेत की तैयारी करना है धान बीज लेना है तथा खाद लेना है अगर उन्हें समय पर सब कुछ उपलब्ध नहीं होगा तो फिर खेती किसानी में पीछे हो जाएंगे।

सहकारी समिति में अनियमित तथा चार सोमवार से किसानों को परेशान होने के सवाल पर आदिम जाति सेवा सहकारी समिति चंद्र मीणा के प्रबंधक धर्मेंद्र कुशवाहा का कहना है कि शासन के द्वारा ऊपर से ही पर्याप्त मात्रा में यूरिया तथा खाद नहीं आ रहा है पिछले वर्ष मार्च अप्रैल में ही खाद्य तथा यूरिया का भंडारण हो गया था इस बार मांग अनुरूप खाद नहीं आ रहा है इसलिए किसानों को तकलीफेरी हो रही है अभी हमारे समिति को सिर्फ 600 बोरी को रखड़ तथा 700 बोरी यूरिया मिला है अब इसमें किस–किस किस को बाती यह बड़ा प्रश्न है सभी किसान चाहते कि उन्हें सबसे पहले यूरिया खाद मिले।

कुछ लोगों को अनुचित लाभ देने के मामले पर उन्होंने कहा कि मुझे नहीं मालूम कि किसान भोर से क्यों लाइन लगते हैं समिति सुबह 10 बजे खुलता है। मेरे आने से पहले दो बंडल खाता वहां जमा था, कौन किया और कैसे किया इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता किसानों के विरोध करने के बाद मैं आज खाद वितरण को कैंसिल कर दिया। कल से सुचारू रूप से उपलब्ध खाद का वितरण किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

कावड़ यात्रा की तैयारी को लेकर बजरंग दल दुर्गा वाहिनी की संयुक्त बैठक हुई

सूरजपुर ब्यूरो– (दैनिक विश्व परिवार)–बजरंग दल दुर्गा वाहिनी बिश्रामपुर के द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कावंड़ यात्रा की तैयारी को लेकर प्रथम बैठक 17 जून को रखा गया था। जिसमें कावंड़ यात्रा की तिथि निर्धारित किया गया इस वर्ष बजरंग दल, दुर्गा वाहिनी कावंड़ 28 जुलाई 2025 को निकालेगी। और कार्यक्रम की रूपरेखा तय नगर को भव्य भगवामय रेडनदी से केनापारा तक भगवाध्वज से सजाया जाएगा। अलौकिक झांकियां छत्तीसगढ़ी संस्कृति कार्यक्रम नृत्य प्रदर्शन एवं इस वर्ष पुन: उज्जैन के महाकाल की सरकार की सवारी पालकी कावंड़ रहेगी। पिछले सालों की भांति कांवरियो की जनसंख्या देखते हुए इस साल बैठक से कांवरियो की जनसंख्या 2 लाख का अनुमान आका गया है। एवं अगला बैठक 05 जुलाई 2025 शनिवार को रखा गया है।

ऑडिटोरियम सूरजपुर मे धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सूरजपुर ब्यूरो–(दैनिक विश्व परिवार)–तिलसिवां सूरजपुर स्थित ऑडिटोरियम मे आज जनभागीदारी अभियान धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें जिले के गणमान्य नागरिक, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती रेखा राजलाल राजवाड़े, जनपद अध्यक्ष श्रीमती स्वाति संत सिंह, श्री बाबूलाल मोरापो ,श्रीमती हेमलता राजवाड़े, श्रीमती योगेश्वरी राजवाड़े, श्रीमती कलेश्वरी कुर्रे, श्री विजय राजवाड़े,जनप्रतिनिधिगण, सूरजपुर एसडीएम श्रीमती शिवानी जायसवाल, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग के सहायक आयुक्त श्री घनश्याम कुमार व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती चंद्रमणी देवपाल सिंह पैकरा ने अपने उद्बोधन में बताया कि भारत सरकार आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने के लिए दो महत्वपूर्ण और समयबद्ध मिशन चला रही है। प्रधानमंत्री जनजातीय न्याय –महा अभियान (पीएम जनमन) और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान। इन पहलों का उद्देश्य देशभर के आदिवासी क्षेत्रों में सेवाओं और अन्य बुनियादी ढांचे को परिपूर्णता प्रदान करना है। जिले मे आज से 'धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान' का शुभारंभ हुआ है जो कि 30 जून तक चलेगा। अभियान के अंतर्गत जिले में 284 गांवों को चिन्हित किया गया है, जिसमें क्लस्टर बना कर शिविर लगाये जा रहे हैं। उन्होंने कहा इन का उद्देश्य अंतिम हितग्राहियों तक उनके व्यक्तिगत अधिकारों को परिपूर्ण करना और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के बारे मे जागरूकता पैदा करना है। उन्होंने सभी उपस्थित जनों से अपील की कि इस अभियान को सफल बनाने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। इस अवसर पर कलेक्टर श्री एस.जयवर्धन ने भी उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि यह अभियान यह जनजातीय क्षेत्रों व समुदायों का समग्र एवं सतत विकास सुनिश्चित करने पर बल देता है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के माध्यम से दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले जनजातियों को सड़क, जल, स्वास्थय, दुरसंचार, राशनकार्ड, बिजली एवं आवास जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना सरकार का लक्ष्य है। गांव में रहने वाली जनजातीय आबादी को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अंतर्गत लगने वाले शिविर में आधार कार्ड, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, स्थानीय प्रमाण पत्र, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम किसान जन–धन खाता, विधवा पेंशन, विकालांग पेंशन, बीपीएल विश्वकर्मा योजना, स्वास्थ विभाग, शिक्षा विभाग समेत अन्य कई विभागों का स्टॉल लगाया गया है, जिसका लाभ ग्रामीणों ने ज्यादा से ज्यादा लोगों को मिले इसके लिए सभी इसका व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार करें।

प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन वर्तमान की महती आवश्यकता – सीईओ जिला पंचायत

स्वच्छ भारत मिशन प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन प्रशिक्षण का आयोजन

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–कलेक्टर सूरजपुर श्री एस. जयवर्धन के मागदर्शन तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सूरजपुर श्रीमती कमलेश नंदनी साहू के निर्देशानुसार स्वच्छ भारत मिशन (ग्रा.) के तहत प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण आज आयोजित किया गया । उक्त प्रशिक्षण में सर्व प्रथम स्वेच्छाग्रही दीदियों को केशवनगर प्लास्टिक प्रबंधन इकाई का भ्रमण कराया गया। तथा उन्हे इकाई का तकनीकी जानकारी दी गई। तदपश्चात जिला पंचायत के सभाकक्ष में जनपद पंचायत सूरजपुर के ग्राम पंचायत केशवनगर ओड़गी के ग्राम पंचायत कुदरगढ़ एवं रामानुजनगर के पस्ता में स्थापित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन यूनिट के सफल संचालन एवं क्रियान्वयन की जानकारी पी.पी.टी के माध्यम से प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में उक्त ग्राम पंचायतों के सरपंच, सचिव, और स्वेच्छाग्रही एवं इनसे लिंक क्लस्टर बनाये गये 26 ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, एवं स्वेच्छाग्रही दीदियां उपस्थित थी।

इस प्रशिक्षण में श्री अक्षय अलंकरी, पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों के प्रांत सयोंजक के द्वारा विस्तार पूर्वक प्लास्टिक के प्रकारों एवं उसके उचित प्रबंधन के विषय मे बताया गयाए । सीईओ जिला पंचायत श्रीमती नंदिनी साहू ने सभी स्वेच्छग्रही दीदियों से नियमित प्लास्टिक कचरा संग्रहण करने एवं शेड में अलग अलग कचरे को रखने एवं क्लस्टर ग्रामो से कचरे लेने और रजिस्टर संधारण किये जाने निर्देशित किया गया। साथ ही उपस्थित सभी सरपंचों से खुले में कचरा फेकने वालो को समक्षाईस देकर अपने ग्राम को स्वच्छ बनाये रखने हेतु आग्रह किया गया । उन्होने उपस्थित सचिवों को निर्देश देते हुए कहा कि अपने ग्राम पंचायत अन्तर्गत प्लास्टिक के प्रयोग को हतोसाहित करने तथा कागज, जुट से बने थैले के उपयोग को प्रोत्साहित करने का कार्य करें।

सौतेली माँ शैलकुमारी को मृत बता कर उसकी नाम की जमीन बेच दी पुलिस अधीक्षक से हुई शिकायत

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–भैयाथान तहसील का बहुचर्चित मामला इन दिनों सुर्खियों में छाया हुआ है जिसमें आमजन भी इस मामले में होने वाले कार्यवाही का बेसब्री से इंतजार कर रहे है इसी बीच शैलकुमारी दुबे के परिवार जनों ने फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र को जब्त कर कार्यवाही करने की मांग को लेकर भी पुलिस अधीक्षक सूरजपुर को एक शिकायत आवेदन भी प्रस्तुत किया है।

शिकायतकर्ताओं ने पुलिस अधीक्षक को बताया है की कैसे एक कलयुगी पुत्र ने अपनी सौतेली माँ को कागजों में एक नहीं अलग अलग समय में दो बार मृत बताकर दो स्थानों की भूमि विक्रय की है।

ग्राम कोयलारी, पटवारी हल्का नंबर 11 ,तहसील भैयाथान, जिला सूरजपुर (छ.ग.) में पं रतन शाह दुबे का गौतम गोत्रीय वंशजों का कुल दो मुहल्लों में निवासरत है जो कि स्टेट काल से पटेल और भैयाथान (झिलमिली) के राजपरिवार के राजपुरोहित रहे हैं 7

इन्हीं के कुल में इनके पौत्र पण्डित बालगोविन्द दुबे के पुत्र विद्वान ब्राह्मण द्वारका प्रसाद दुबे के चार पुत्रों के सभी पुत्र रामकृपाल दुबे ,महेंद्र दुबे ,गोपेश दुबे , दीपेश दुबे रविशंकर दुबे , सतीश दुबे ,राजेश दुबे ,सीधेश दुबे ने पुलिस अधीक्षक महोदय सुरजपुर से विरेन्द्र दुबे के कृत्यों से पीड़ित होकर उसके विरूद्ध शिकायत करते हुये कहा कि आपराधिक प्रवृत्ति के विरेन्द्र नाथ दुबे द्वारा जीवित शैल कुमारी दुबे को दो बार मृत घोषित कर शैल कुमारी के निजी जमीन के साथ ही परिवार की सम्मिलात खाते की भूमि को सांठगांठ से एक पक्षीय बंटवारा करवा के बेचा जा रहा है जिससे पूरा परिवार त्रस्त है ।

इस संबंध में शिकायतकर्ताओं ने बताया की ग्राम कोयलारी के सम्मिलात खाते के भूमि स्वामी पण्डित द्वारका प्रसाद दुबे सूरजपुर के नगर पुरोहित भी थे उनके चार पुत्रों पण्डित किशुन राम ,पण्डित विश्वनाथ दुबे, पण्डित राधेश्याम दुबे व पण्डित ओंकार नाथ दुबे में तीसरे पुत्र पण्डित राधेश्याम दुबे जो कि वन विभाग में रेंजर के पद पर कार्यरत थे ,उनके तीन विवाह हुये 7 पहली पत्नि ऋद्धि से 1954 में विरेन्द्र का जन्म हुआ और जन्म देने के अल्प महीनों में उनका स्वर्गवास हो गया 7 इसके एक वर्ष पश्चात् उन का विवाह थाड़पाथर (बिहारपुर) निवासी विश्वनाथ पाठक की पुत्री सोनामति (सोनकुंवर) से श्री भोलाप्रसाद पाण्डेय के द्वारा सम्पन्न कराया गया 7 ग्राम बेदमी के निवासी और सरगुजा के जनरल काउंसलर श्री भोलाराम पाण्डेय सोनकुंवर के मामा थे और

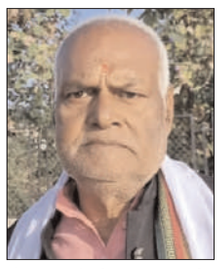

शैलकुमारी से हुआ जिनसे दो पुत्री और तीन पुत्र हैं 7

दो अलग अलग बार शैलकुमारी को मृत बता बेची जमीन : वर्ष 1966 में शैलकुमारी दुबे ने ग्राम नमनाकलां ,अम्बिकापुर में 17 डिसमिल भूमि क्रय की जिसे विरेन्द्र नाथ दुबे ने शैलकुमारी को 1978 में मृत बताते हुये अपने आप को उनका एकमात्र वारिस होने का फर्जी दावा कर राजस्व अधिकारियों से सांठगांठ कर 1984 में नामान्तरण करवा कर देवनारायण जायसवाल को रजिस्टर्ड विक्रय पत्र के माध्यम से बेच दिया 7 इसकी सूचना मिलने पर शैलकुमारी दुबे सौतेला पुत्र होने के पश्चात भी विरेन्द्र के विरूद्ध एफआई.आर नहीं किया है और माननीय न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी अम्बिकापुर के समक्ष नामान्तरण निरस्त करने को अपील करती हैं जिस पर श्रीमान के.आर .मेहरे की न्यायालय ने 30/11/1985 को अपने आदेश में शैलकुमारी को जीवित मानते हुये शैलकुमारी के पक्ष में नामान्तरण करने का आदेश दिया ,शैल कुमारी उस भूमि पर सतत काबिज रहीं 7

बिरेन्द्र दुबे इस प्रकरण पर जेल जाने के भय से इस पर चुप रहे पर अपने कृत्यों से समूचे परिवार को त्रस्त करता रहा 7

इसी बीच विरेन्द्र नाथ दुबे थाना रघुनाथनगर से दिनांक 09/02/1967 का शैलकुमारी दुबे का एक और फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र 2006 में बनवाता है और तहसील अम्बिकापुर से शैलकुमारी को फैत बताकर और उनका फर्जी एकमात्र उत्तराधिकारी होने का दावा कर नामान्तरण आदेश करवा लेता है 7 लेकिन वह आदेश पालन नहीं करवाता ,क्योंकि उसे भय था कि श्री राधेश्याम दुबे अभी जीवित हैं और वे दूसरी बार शैलकुमारी को मृत बताये जाने पर विरेन्द्र को क्षमा नहीं करेंगे और उसके विरुद्ध एफ आई. आर. अवश्य करवायेंगे इसीलिये विरेन्द्र दुबे श्री राधेश्याम को वृद्धावस्था में लड़ाई झगड़ा कर के पीड़ित करने लगता है जिससे वे शीघ्र मरें और विरेन्द्र, अपना खेल खेल सकें।

इसी दौरान श्री राधेश्याम दुबे ने अपनी पत्नी सोनकुंवर ननिहाल में ही रहती थीं7

विवाह के दो वर्ष पश्चात उनकी भी मृत्यु हो गई 7जिसके लगभग डेढ़ वर्ष के पश्चात श्री राधेश्याम दुबे का तृतीय विवाह शैलकुमारी से नमनाकलां की भूमि विक्रय करवा दी 7 विरेन्द्र के पक्ष में नामान्तरण आदेश धरा का धरा रह गया

पण्डित श्री राधेश्याम दुबे के 2010 में देहावसान होने पर कमलेश दुबे पटवारी को धमकाने लगा कि तुमने जमीन विक्रय के दस्तावेज कैसे तैयार किये जबकि भूमि स्वामी उसके पिता विरेन्द्र हैं तब शैलकुमारी और परिजनों ने विरेन्द्र के विरुद्ध कोतवाली अम्बिकापुर में इसकी सूचना दी और विरेन्द्र को गिरफ्तार कर चालान किया गया

बाद में विरेन्द्र के छोटे पुत्र छोटु के दुखद निधन होने पर उपजे वातावरण और विरेन्द्र द्वारा क्षमायाचना किये जाने पर केस पर ध्यान न देकर बचा लिया गया

इस प्रकरण में विरेन्द्र को दोषमुक्त ही किया गया है न कि शैलकुमारी को मृत घोषित किया गया है ।

केश में बचाये जाने पर भी विरेन्द्र डूबेने दुष्टता न छोड़ी और शैलकुमारी दुबे की करकोटी ,तहसील भैयाथान जिला सूरजपुर स्थित भूमि का नामान्तरण दिनांक 09/02/1967 के फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र के आधार पर करवा कर बेच भी दिया जिसमें संजय राठौर तहसीलदार की संलिप्तता होने पर संभागायुक्त सरगुजा ने उसे निलम्बित भी कर दिया है ।

ध्यान देने योग्य मुख्य बात यह है कि जिस दिनांक 09/02/1967 के फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र के आधार पर नामान्तरण करवा कर बेचा गया है उसे शैलकुमारी दुबे ने दिनांक 11/08/1976 को क्रय की 7

बीरेंद्र दुबे ये तो बता दो...– बीरेंद्र दुबे ने शैलकुमारी दुबे को 1978 व 1967 दोनों में दो बार मृत बताकर दो स्थानों नमनाकलां अम्बिकापुर व करकोटी,भैयाथान की भूमि नामान्तरित करवा के बेची,अब इस बारे में तो बीरेंद्र दुबे ही बता सकते है शैलकुमारी की मृत्यु एक बार होगी कि दो बार ?

वहीं एक तरफ अब इस मामले को लेकर अब आम जन मानस में चर्चा हो रही है कि इतना बड़ा संगीन अपराध घटित होने के बाद भी जिला प्रशासन द्वारा तो प्रारंभिक जांच में तहसीलदार को दोषी मानते हुए निलंबन की कार्यवाही कर दी गई है कि किंतु पुलिस प्रशासन के द्वारा इस मामले को लेकर कोई भी कार्यवाही अब तक नहीं की गई है । वहीं दूसरी तरफ कुछ बुद्धजीवियों का यह भी कहना है कि पुलिस प्रशासन और जिला प्रशासन इस मामले में कोई ठोस कार्यवाही करने वाली है इस कारण भी विलंब हो रहा है।

संगठन एवं कार्यकर्ताओं के बीच नजदीकियां लाने मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े का पहल कार्यकर्ताओं से की सीधा संवाद

संगठनात्मक संवाद जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं के बीच घटा दूरी का अंतर

लटोरी-जयनगर मंडलों में जुटे कार्यकर्ता, स्थानीय मुद्दों को मिला प्राथमिकता में स्थान

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)– महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े द्वारा प्रदेश भर में संगठन के जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं से सीधे संवाद कर कार्य संस्कृति को नई दिशा दी जा रही है। इसी क्रम में उन्होंने सूरजपुर जिले के लटोरी और जयनगर मंडलों का दौरा कर स्थानीय जनप्रतिनिधियों, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से व्यापक विचार–विमर्श किया।

मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने संवाद के दौरान स्पष्ट किया कि संगठन और शासन के बीच की दूरी को समाप्त करने के लिए यह पहल आवश्यक है। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर जो भी महत्वपूर्ण सुझाव, प्रस्ताव या जनहित के कार्य सामने आ रहे हैं, उन्हें भविष्य की कार्ययोजना में सम्मिलित किया जाएगा। लटोरी मंडल के कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य श्रीमती किरण सिंह केराम, भाजपा मंडल अध्यक्ष श्री ठाकुर प्रसाद पैकरा, भाजपा युवा मोर्चा ज़िलाध्यक्ष श्री रविन्द्र भारती, महिला मोर्चा जिला महामंत्री श्रीमती नूतन विश्वास तथा पूर्व मंडल अध्यक्ष श्री मोहन शर्मा सहित अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने क्षेत्रीय समस्याओं एवं योजनाओं की जमीनी स्थिति पर मंत्री को जानकारी दी।

जयनगर मंडल के कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष श्री हरीश राजवाड़े, सूरजपुर जनपद उपाध्यक्ष श्री मनमंत बछाड़, जनपद सदस्य श्रीमती धनेश्वरी सिरदार, पूर्व मंडल अध्यक्ष श्री देवधन बिंझिया सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं एवं क्षेत्रवासियों ने भाग लिया। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने प्रत्येक प्रतिनिधि से सुझाव प्राप्त कर उन्हें प्राथमिकता के आधार पर विभागीय योजनाओं से जोड़ने का आश्वासन दिया।

संगठन के साथ समन्वय को मिली मजबूती– मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने कहा कि संगठन और शासन के समन्वय से ही अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुँचाया जा सकता है। इस प्रकार के संवाद कार्यक्रमों से न केवल योजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन होता है, बल्कि आमजन की अपेक्षाओं को भी दिशा मिलती है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर बुधवार 18 जून 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

पाकिस्तान पारी से हारा

भारत के प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान पर भारत की निर्णायक जीत का जिक्र करने के लिए क्रिकेट की एक आकषर्क उपमा का इस्तेमाल किया। कहा कि भारत ने अपने प्रतिद्वंद्वी को 'पारी से हरा' दिया। जनरल चौहान सावित्री बाई फुले पुणो विविद्यालय के रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित 'भविष्य के युद्ध और संघष' पर अपना भाषण पूरा करने के उपरांत सीडीएस वहां मौजूद विद्वानों के सवालों का जवाब दे रहे थे। क्रिकेट की उपमा देने से पहले जनरल चौहान ने फुटबॉल मैच का जिक्र किया था। कहा था, 'मान लीजिए आप एक फुटबॉल मैच में जाते हैं, और 4-2 से जीत जाते हैं, प्रतिद्वंद्वी ने दो गोल किए और आपने चार गोल किए। तो यह बराबरी का मैच रहा। इसके तुरंत बाद उन्होंने रूपक के जरिए शत्रुता के परिणाम के बारे में स्पष्ट रूप से अंतर समझाने के लिए क्रिकेट का सहारा लिया। इस प्रकार भारत के शीर्ष कमांडर ने प्रकारांतर से भारत को हुए नुकसान की बात भी कही जब कहा कि पेशेवर सेनाएं अस्थायी नुकसान से प्रभावित नहीं होतीं। उन्होंने कहा कि नुकसान महत्त्वपूर्ण नहीं होता, परिणाम महत्त्वपूर्ण होता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि पाकिस्तान को भारत हजारों जख्म देकर लहूलुहान करने की नीति पर चल रहा है, और ऑपरेशन सिंदूर के जरिए से सीमा पार से आतंकवाद के खिलाफ भारत ने स्पष्ट लक्ष्मण रेखा खींच दी है। दरअसल, सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ भारत के नजरिए अब स्पष्ट बदलाव देखा जा रहा है। पहलगाम आतंकी हमले से कुछ रोज पहले पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल आसिम मुनीर ने भारत को लहुलुहान करते रहने की कुत्सित मंशा जतलाई थी। उसके कुछ रोज बाद ही पहलगाम की बैसरान घाटी में सैलानियों पर हमला करके पाकिस्तान ने अपने कुत्सित मंसूबे को पूरा करने का प्रयास तो किया लेकिन भारत ने पूरी सख्ती से जवाब देते हुए उसकी जमीन पर चल रहे आतंकवादियों के ठिकानों को ध्वस्त करके मुकम्मल जवाब दे दिया। अब सीडीएस का यह कहना कि भारत अपने प्रतिद्वंद्वी को हजारों जख्म देकर लहूलुहान करने की नीति पर चल पड़ा है, तो यह पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी है कि नहीं संभला तो अपना खासा नुकसान कर बैठेगा। और किसी अन्य देश से मदद लेना भी उसके काम नहीं आने वाला। दरअसल, राजनीतिक नेतृत्व की दृढ़ता ने भारतीय सेनाओं का मनोबल बढ़ा दिया है।

बीज से बाजार तक: किसान कल्याण को समर्पित सरकार

शिवराज सिंह

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है, जहां किसान केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना का एक मजबूत स्तंभ है। जब किसान मिट्टी को जोतता है तो वह सिर्फ फसल नहीं, बल्कि देश के करोड़ों नागरिकों के लिए जीवन और समृद्धि का बीज बोता है। कृषि क्षेत्र करोड़ों लोगों को आजीविका देता है। साथ ही, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण विकास का प्रमुख आधार भी है। ऐसे में राष्ट्र की प्रगति के लिए हमारे किसान भाइयों-बहनों की उन्नति आवश्यक है। आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल और दूरदर्शी नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कृषि और किसान कल्याण को नीति-निर्माण की सर्वोच्च प्राथमिकता में स्थान दिया है। किसानों की मेहनत को उचित सम्मान मिले, उनकी फसल को सही दाम मिले और उनका जीवन खुशहाली से भरा हो, इसके लिए केंद्र सरकार संकल्पित है। आज संपूर्ण देश ऐसी नीतियों और प्रयासों का साक्षी बना है, जो किसानों की समृद्धि व आत्मनिर्भरता के लिए अटूट प्रतिबद्धता दर्शाते हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार का हर कदम-हर योजना-हर निर्णय किसानकल्याण के लिए समर्पित है। बीते दशक में केंद्र सरकार ने किसानकल्याण के लिएऐतिहासिक कदम उठाए हैं, जिनसे न केवल किसानों की आय बढ़ी, बल्कि उनका आत्मविश्वास भी सुदृढ़ हुआ है। चाहे न्यूनतम समर्थन मूल्य में अभूतपूर्व वृद्धि हो, फसलों की खरीद में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हो या तकनीकी नवाचारों के माध्यम से खेती को आधुनिक बनाने का प्रयास; केंद्र सरकार ने हर क्षेत्र में किसानों के लिए दिन-रात काम किया है। किसान हितैनीतियों, तकनीकी के उपयोग, नवाचार और बाज़ार तक सुगम पहुंच के माध्यम से भारत एक ऐसी कृषि व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, जो टिकाऊ, समावेशी और भविष्य उन्मुख हो। पहले के समय में हमारे किसान फसल लागत से नाममात्र का लाभ कमा पाते थे, पर आदरणीय प्रधानमंत्री ने स्पष्ट नीति बनाई कि हर फसल पर उसकी लागत से ऊपर, कम से कम 50न मुनाफा सुनिश्चित होगा। आज खरीफ व रबी की प्रमुख फसलों के एमएसपी में 1.8 से 3.3 गुना तक की वृद्धि की गई है। कभी धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2013-14 में 1310 प्रति क्विंटल था, जो 2025-26 में बढ़कर ?2369 हो गया है। इसी तरह ज्वार का एमएसपी 1500 से बढ़कर 3699, बाजरा 1250 से

2775, रागी 1500 से 4886, मक्का 1310 से 2400, तूर (अरहर) 4300 से 8000, मूंग 4500 से 8768, उड़द 4300 से 7800, मूंगफली 4000 से 7263, सूरजमुखी बीज 3700 से 7721, सोयाबीन (पीला) 2560 से 5328, तिल 4500 से 9846, रामतिल 3500 से 9537, कपास 3700 से 7710 रुपये प्रति क्विंटल हो गया है। रबी फसलों में गेहूं का एमएसपी 1400 से 2425, जौ 1100 से 1980, चना 3100 से 5650, मसूर 2950 से 6700, रेपसीड/सरसों 3050 से 5950, कुसुम्भ 3000 से 5940, पटसन 2400 से 5650 और कोपरा 5250 से 11582 रुपये प्रति क्विंटल तक बढ़ाया गया है। इन सभी फसलों के एमएसपी में ऐतिहासिक वृद्धि हुई है, जिससे किसानों को उनकी मेहनत का पूरा दाम मिलना सुनिश्चित हुआ है। 2004-14 के मुकाबले 2014-2025 के दौरान एमएसपी पर खरीदी गई फसलों की मात्रा और भुगतान में भी रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। धान की खरीद 45 करोड़ 90 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 76 करोड़ 8 लाख मीट्रिक टन (1.7 गुना), गेहूं 22 करोड़ 54 लाख से 33 करोड़ 37 लाख (1.4 गुना), दलहन 6 लाख 29 हजार से 1 करोड़ 80 लाख (28.6 गुना), तिलहन 47 लाख 75 हजार से 1 करोड़ 27 लाख (2.7 गुना), वाणिज्यिक फसलें 35 लाख 27 हजार से 80 लाख 83 हजार (2.3 गुना) और सभी एमएसपी फसलें मिलाकर 69 करोड़ 87 लाख से 113 करोड़ 92 लाख मीट्रिक टन (1.6 गुना) हो गई हैं। किसानों को भुगतान की गई एमएसपी राशि भी सभी फसलों के लिए 7 लाख 41 हजार करोड़ से बढ़कर 23 लाख 61 हजार करोड़ रुपये (3.2 गुना) हो गई है। धान के लिए 4 लाख 44 हजार करोड़ से 14 लाख 16 हजार करोड़ (3.2 गुना), गेहूं के लिए 2 लाख 56 हजार करोड़ से 5 लाख 65 हजार करोड़ (2.2 गुना), दलहन के लिए 19 सौ करोड़ से 98 हजार करोड़ (51 गुना), तिलहन के लिए 9 हजार करोड़ से 65 हजार करोड़ (7.1 गुना), वाणिज्यिक फसलों के लिए 26 हजार करोड़ से 1 लाख 33 हजार करोड़ (5 गुना) रुपये का भुगतान हुआ है।ये आंकड़े किसानों के प्रति मोदी सरकार की प्रतिबद्धता, किसानों की मेहनत का सम्मान और उनकी आर्थिक मजबूती का प्रमाण हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि दलहन, तिलहन और वाणिज्यिक फसलों जैसे तिल, मूंगफली और सूरजमुखी में भी रिकॉर्ड एमएसपी वृद्धि हो, ताकि किसानों को फसल विविधता का लाभ मिले और उनकी आय में स्थिरता आए। केंद्र सरकार ने केवल एमएसपी बढ़ाने तक ही खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि यह लाभ सीधे किसानों के खाते में पहुंचे। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से हमने पारदर्शिता और गति के साथ किसानों को उनकी मेहनत का पूरा दाम दिलाया है। यह एक ऐसी कृषि क्रांति है, जो हमारे किसान भाइयों-बहनों का जीवन व खेती की दशा-दिशा बदल रही है। अब किसान निश्चिंत होकर खेती करता है, क्योंकि उसे पता है कि उसकी फसल का उचित मूल्य व समय पर भुगतान सुनिश्चित मिलना है। आज केंद्र सरकार बीज से बाजार तक, हर कदम पर किसानों के साथ खड़ी है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड से किसानों को अपनी मिट्टी की सेहत जानने और सही फसल चुनने में मदद मिल रही है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्राकृतिक आपदाओं से आर्थिक सुरक्षा दे रही है। ई-नाम के जरिए डिजिटल बाजार से जुड़कर किसानों को बेहतर दाम मिल रहा है। ड्रोन और स्मार्ट सिंचाई तकनीक खेती को आसान और आधुनिक बना रहे हैं। इसके साथ ही, प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण, और कृषि यंत्रों पर अनुदान के माध्यम से हमने किसानों को आत्मनिर्भर बनाने का हरसंभव प्रयास किया है।सरकार ने किसानों को ब्याज सहायता के तहत किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के माध्यम से 3 लाख रुपये तक का अल्पकालिक ऋण 7न ब्याज पर उपलब्ध कराया है, समय से चुकाने पर 3न अतिरिक्त छूट मिलती है, जिससे प्रभावी ब्याज दर 4न रह जाती है। देश में 7.75 करोड़ से अधिक केसीसी खाते हैं, जिससे किसानों को सस्ता व सुलभ ऋण मिल रहा है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड, ई-नाम, ड्रोन, स्मार्ट सिंचाई, प्राकृतिक खेती, कृषि यंत्रों पर अनुदान आदि के माध्यम से खेती को आधुनिक-टिकाऊ बनाया जा रहा है। चना, मसूर, उड़द और अरहर जैसी फसलों की खरीद और भुगतान की व्यवस्था को और मजबूत किया गया है, ताकि किसानों को समय पर उसका पूरा हक मिले। प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहतमूल्य समर्थन योजना, मूल्य न्यूनता भुगतान योजना, बाजार हस्तक्षेप योजना और मूल्य स्थिरीकरण निधि को लागू किया गया हैं। पीएसएस के तहत दलहन, तिलहन व कोपरा की एमएसपी पर खरीद सीधे किसानों से की जाती है। 2024-25 में सोयाबीन की 19.97 लाख मीट्रिक टन व मूंगफली की 17.73 लाख मीट्रिक टन खरीद की गई, जो अब तक की सबसे अधिक है। तूर, उड़द और मसूर की 100न खरीद सुनिश्चित की गई है, जिससे इन फसलों की खेती को बढ़ावा मिला है। पीडीपीएस के तहत तिलहन किसानों को एमएसपी व बाजार मूल्य के अंतर की भरपाई सीधे उनके खाते में की जाती है। राज्यों को खरीद के लिए पर्याप्त मात्रा स्वीकृत की गई है और आवश्यकता अनुसार समय-सीमा भी बढ़ाई जाती है। एमआईएस के तहत अदरक की खरीद कर्नाटक में, लाल मिर्च की खरीद आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में, टमाटर की खरीद मध्यप्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश में एनसीसीएफ व नैफेड के माध्यम से की गई है। गुजरात को चना खरीद के लिए 3.27 लाख मीट्रिक टन की स्वीकृति दी गई।

आलेख

रोम जल रहा था नीरो बंशी बजा रहा था, राहुल गांधी भी वही कर रहे हैं

अजय दीक्षित

ईसा के बाद पहली सदी 55 में रोम में एक शासक हुआ नीरो। उसने अपने पूरे कुल का नाश कर दिया और अंत में रोम में आग लग वादी। इसके बाद वह एक ऊंचे टीले पर बैठ गया और बंशी बजाने लगा।यह बात कांग्रेस नेता एवं लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर एक दम सटीक बैठती है। कांग्रेस रूपी रोम का सत्यानाश कर तत्कालीन सम्राट नीरो की भांति ऊलजुलूल व्यानबाजी कर बंशी बजा रहे हैं। उन्होंने 140 वर्ष पुरानी कांग्रेस पार्टी की बंशी बजा दी है। नीरो कथानक रोम का बहुत ही प्रतिष्ठित जूलियन क्लाउड्स परिवार का 55 एडी में बंशज होकर शासक हुआ।उसने पूरे परिवार को शनै शनै मार दिया और रोम में आग लगा दी खुद इसे देखकर आनंदित हो कर बांसुरी बजाने लगा। इटली में आज भी इस बकाया को सुनाया जाता है। भारत की 1885 में स्थापित कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गयी थी और उस पार्टी ने 70 वर्ष इस देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में शासन किया।राहुल गांधी के परिवार के तीन प्रधानमंत्री बने।उनके पर नाना जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, ।केअब 2025 में राहुल गांधी उसी देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था को निशाना बना रहे हैं जो उनके पुरखों ने स्थापित की । 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव पर प्रश्न चिन्ह, भारत पाकिस्तान युद्ध में सेना पर प्रश्न चिन्ह, वायु सेना के कितने जेट गिरे,सीज फायर पर प्रश्न चिन्ह,संसद का विशेष सत्र, अपने बुजुर्ग नेता शशि थरूर, सलमान खुर्शीद,पी चिदंबरम पर अविश्वास, आदि ऐसे कारनामे में है कि वे नेता प्रतिपक्ष को सारगर्भित नहीं करते ।अब वे आगे आने वाले बिहार विधानसभा चुनाव से हार के अंदेशे से कन्नी काट रहे हैं। दरअसल 2024 में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को आशातीत सफलता हासिल तो नहीं हुई मगर 100 सीट जीतने से सम्मान रह गया और वह नेता प्रतिपक्ष भी बन गए। लेकिन 2014 से अब तक 42 राज्यों में विधानसभा चुनाव हुए जिसमें से एक हिमाचल प्रदेश,एक कर्नाटक,एक तेलंगाना में ही कांग्रेस जीत सकी है। बरना उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली, गोवा, ओड़िशा, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम,असम, नागालैंड, त्रिपुरा, जम्मू कश्मीर, बिहार, पश्चिमी बंगाल, आंध्र प्रदेश उत्तराखंड,केरल,में दो बार विधानसभा चुनाव हार चुकी है। देश में पूर्व से पश्चिमी और उत्तर से दक्षिण में ले दे के कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना में सरकार है ।राज्य सभा में सांसदों की संख्या 31 रह गई है। राहुल गांधी कांग्रेस की इस दशा के लिए नीरो के रोम की तरह जिम्मेदार हैं। वे कितने लोकतांत्रिक व्यवस्था के हामी यह इस घटना से मालूम हुआ था जब संसद द्वारा पारित उनके ही प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कागज को प्रेस ब्रीफिंग में फाड़ दिया था और सरकार अपना निर्णय बदलना पड़ा था।इस समय कांग्रेस इतनी गयी गुजरी पार्टी हो चुकी है कि महाराष्ट्र में शिवसेना के संजय राउत ने घोषणा की है कि वह अब कांग्रेस के साथ मिल कर चुनाव नहीं लड़ेगी । ममता बनर्जी ने तो कांग्रेस से लोकसभा चुनाव में ही पल्ला झाड़ लिया। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी कांग्रेस बोझ समझती है। दिल्ली विधानसभा चुनाव में आप जैसी छोटी पार्टी ने अलग चुनाव लड़ा। तमिलनाडु, केरल में क्षेत्रीय पार्टी जितनी सीट दे दें वह स्वीकार है। मप्र, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा,में 10-20 साल तक कोई उम्मीद नहीं है।कांग्रेस की सबसे बड़ी परेशानी है कि कोई नया कार्यकर्ता क्यों पार्टी से जुड़े इसका कोई संस्थान नहीं है। कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, दिग्विजय सिंह, अशोक गहलोत, कमलनाथ, सरीखे उम्र दराज नेता हैं, अंबिका सोनी अभी भी सक्रियता चाहती हैं, मनीष तिवारी,आनंद शर्मा को घर बैठा दिया है।कितनी अनहोनी बात है कि केंद्रीय सरकार ने कांग्रेस द्वारा सुझाए उन नामो को दर किनार कर दिया जो उस प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने थे जो भारत का पक्ष रखने विदेश जाने थे। क्योंकि राहुल गांधी ने 11 मई को युद्ध विराम के बाद विदेश मंत्री एस जयशंकर से पूछा था कि भारत के कितने लड़ाकू विमान गिर गए। युद्ध में यह महत्वपूर्ण होता है कि कौन जीता है। द्वितीय विश्व युद्ध में इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका,रूस यानी मित्र देश मिलकर जापान और जर्मनी से लड़े ।दोनों तरफ के लाखों सैनिक मारे गए ।

सोच का परिणाम है वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

ऐसा नहीं है कि इन हालातों से सरकार अनजान हो यहीं कारण है कि राजस्थान की भजन लाल सरकार ने मानसून के ठीक पहले पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से 20 जून तक समूचे प्रदेश में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित कर रही है। जल है तो कल है कि चुनौती के बीच राजस्थान की भजन लाल सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में मानसून से पूर्व 5 जून से 20 जून तक वंदे गंगा जल संरक्षण- जन अभियान इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि राजस्थान सहित पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, दादरा-नगर हवेली और दमन दीव देष के ऐसे राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश है जहां भूजल की निकासी भूजल के पुनर्भरण से कहीं अधिक हो रही है। अगर राजस्थान ही की बात करें और वह भी शुद्ध पेयजल की बात की जाए तो पीने योग्य पानी और उसकी उपलब्धता में 30 फीसदी का अंतर है। 30 प्रतिशत का अंतर कोई छोटा मोटा अंतर नहीं है ऐसे में इसे भलीभांति समझा जा सकता है कि राज्य सरकार को नागरिकों के लिए पीने के शुद्ध पानी की उपलब्धता बनाये रखने की चुनौती से कैसे दो-चार होना पड़ता होगा। वास्तव में यह गंभीर समस्या है। समूचे विश्व में पानी की उपलब्धता का संकट है। यदि हम भारत की ही बात करें तो 1950 में जहां प्रतिव्यक्ति सालाना 5200 घनमीटर पानी की उपलब्धता थी वह 2024 आते आते 1401 घनमीटर रह गई है और यदि विशेषज्ञों की माने तो 2050 तक यह उपलब्धता 1191 घनमीटर ही रह जाने की संभावना हो गई है। यही कारण है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों कहा कि हमें पानी के उपयोग के संदर्भ में कम करें, पुन: उपयोग करें और पुन: चक्रित करने की नीति पर चलना होगा। देश में जल के पुनर्भरण में लगातार कमी आ रही है। प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में आज भारत 182 वें स्थान पर आ गया है। भूजल की उपलब्धता को देखा जाए तो 1950 से 2024 के दौरान 73 प्रतिशत की कमी आ गई है। दिल्ली, चैन्नई, पुणे, हैदराबाद, मुंबई सहित देश के अनेक छोटे बड़े शहर पेयजल की गंभीर समस्या से जुझ रहे हैं। विश्वव्यापी जल संकट को देखते हुए राजस्थान की भजन लाल सरकार की इस पहल को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। दरअसल देश में उपलब्ध भूजल का 87 प्रतिशत उपयोग खेती किसानी में होता है तो 11.7 प्रतिशत उपयोग घरेलू कार्यों और लगभग 2 प्रतिशत उपयोग ही औद्योगिक क्षेत्र में होता है। संकट का बड़ा कारण परंपरागत जल संग्रहण स्रोतों का नष्ट होना, उनमें अवरोध होना, बढ़ती आबादी और शहरी क्षेत्र में आबादी का घनत्व बढ़ने के साथ ही अत्यधिक पानी की आवश्यकता वाली उपज को बढ़ावा देने से जल दोहन अधिक होने लगा है। सीवेज के कारण पानी का अत्यधिक उपयोग, बरसाती जल का प्रोपर संग्रहण नहीं होना, जंगलों का कक्रिट के जंगलों में बदलना और पानी के अन्य कार्यों में भी अत्यधिक उपयोग से पानी का संकट दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अनियमित बरसात और बरसाती चक्र में बदलाव को भी एक कारण माना जा सकता है। आज जितने पानी के पीने के लिए आवश्यकता होती है उससे कई गुणा अधिक पानी फ्लस करने, वाहनों की धुलाई, पौधों के रखरखाव व अन्य कार्यों में होने लगा है। सीमेंट, लोहा, जस्ता और अब एमसेंड आदि उद्योगों के लिए भी अधिक पानी की आवश्यकता होने लगी है। एक समय था जब सावन भादों में बरसात की झड़ी लगती थी और कई दिनों तक सूर्य देवता के दर्शन नहीं होते थे तो उस झड़ी का पानी सीधे जमीन में जाता था और वह प्राकृतिक वाटर हार्वेस्टिंग का सिस्टम होता था। सड़कों के साथ साथ ढ़लान क्षेत्र होता था और वहां एकत्रित पानी क्षेत्र में जल स्तर बढ़ाने के साथ ही पशुओं के पीने के काम भी आ जाता था। राजस्थान में रेगिस्तानी इलाकों में टांके आदि परंपरागत जल संग्रहण के साधन होते थे आज हम इन्हें भूलते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि गिरते भूजल स्तर और जल संग्रहण को लेकर सरकार गंभीर ना हो। बल्कि कहना तो यह होगा कि सरकार अत्यधिक गंभीर होने के बावजूद जो परिणाम आने चाहिए वह प्राप्त नहीं हो सके हैं। इसका एक प्रमुख कारण दूरगामी सोच के साथ नीति और क्रियान्वयन का ना होना भी है। सरकार द्वारा वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम सरकार स्तर पर बड़े स्तर पर बनाने और निजी मल्टी स्टोरिज व सरकार गैरसरकारी संस्थानों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने पर जोर और बनाये जाने के बावजूद उनकी गुणवत्ता को लेकर सवाल इसलिए उठते रहते हैं कि ना तो रखरखाव पर ध्यान दिया जाता है और ना ही पानी के बहाव का पूरा ध्यान देने के कारण यह अपने उद्देश्यों पर खरे नहीं उतरे हैं। ऐसा नहीं है कि राजस्थान की भजन लाल सरकार ने मानसून के ठीक पहले पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से 20 जून तक समूचे प्रदेश में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित कर रही है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस अभियान में जनभागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया गया है और स्वयं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक प्रमुख समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका की मुहिम पर रामगढ़ में श्रमदान में हिस्सा लेकर आमजन को संदेश दिया है। राज्य सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अभियान के दौरान जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल प्रदूषण में कमी, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता, भूजल पुनर्भरण, व्यवहार परिवर्तन से बेहतर जल उपयोग और व्यापक स्तर पर पौधारोपण के हरियालो राजस्थान की तैयारी आरंभ की है। रामगढ़ राजस्थान की राजधानी जयपुर की किसी जमाने में पेयजल की उपलब्धता के लिए जीवन रेखा माना जाता था और 1982 के एशियाड़ की नौकायन प्रतियोगिता के बाद इसके बहाव क्षेत्र में अतिक्रमणों का जो ग्रहण लगा वह इसे सूखे मैदान में बदल कर रख दिया है। पिछले लंबे समय से रामगढ़ को पुनर्जीवित करने की मुहिम चल रही है लगता है सरकार ने यहां वैकल्पिक स्रोत से पानी लाने की जो योजना बनाई है और समग्र प्रयासों से परंपरागत पानी के अवरुद्ध रास्ते चलने लगते हैं तो रामगढ़ को नया जीवन मिल सकेगा।

बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण दुनिया की जटिल पर्यावरण समस्या

ललित गर्ग

प्रकृति को पस्त करने, वायु एवं जल प्रदूषण, कृषि फसलों पर घातक प्रभाव, मानव जीवन एवं जीव-जन्तुओं के लिये जानलेवा साबित होने के कारण समूची दुनिया में बढ़ते प्लास्टिक एवं माइक्रोप्लास्टिक के कण एक बड़ी चुनौती एवं संकट है। बढ़ते तापमान, बदलते जलवायु एवं ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्रगति से बढ़ा रहे हैं। जिससे समुद्र किनारे बसे अनेक नगरों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। इंसानों को प्रकृति, पृथ्वी एवं पर्यावरण के प्रति सचेत करने के लिये विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है, जो पर्यावरण, प्रकृति एवं पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय दिवस है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोज्य यह दिवस दुनिया भर के लाखों लोगों को हमारे ग्रह की सुरक्षा और पुनर्स्थापना के साझा मिशन के साथ एकजुट करता है। बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण दुनिया की एक गंभीर एवं जटिल समस्या है, इसीलिये 2025 में इस दिवस की थीम प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने पर केंद्रित है। कोरिया गणराज्य वैश्विक समारोह की मेज़बानी करेगा। दशकों से प्लास्टिक प्रदूषण दुनिया के हर कोने में फैल चुका है, यह हमारे पीने के पानी, हमारे खाने, हमारे शरीर, हमारे पर्यावरण में समा रहा है। इस प्लास्टिक कचरे की गंभीर समस्या से निपटने का एक वैश्विक संकल्प निश्चित ही एक समाधान की दिशा बनेगा। हर साल 430 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक का उत्पादन होता है, जिसमें से लगभग दो-तिहाई केवल एक बार उपयोग के लिए होता है और जल्दी ही फेंक दिया जाता है। 1973 से संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के नेतृत्व में पर्यावरण जागरूकता के लिए यह दिवस सबसे बड़ा वैश्विक अभियान बन गया है, जो आज की सबसे गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए 150 से अधिक देशों के विशाल वैश्विक दर्शकों को शामिल करता है। गत वर्ष इस दिवस की मेजबानी करते हुए सऊदी अरब ने भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता पर प्रकाश डालते हुए सकारात्मक प्रयासों का जश्न मनाया और पर्यावरण के मुद्दों पर काम करने वाले निजी और परोपकारी संगठनों के लिए अधिक समर्थन और वित्त पोषण की घोषणा की। यह सर्वविदित है कि इंसान व प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। इंसान के लोभ, सुविधावाद एवं तथाकथित विकास की अवधारणा ने पर्यावरण का भारी नुकसान पहुंचाया है, जिसके कारण न केवल नदियां,

वन, रेगिस्तान, जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं बल्कि ग्लेशियर भी पिघल रहे हैं, तापमान का 50 डिग्री पार करना जो विनाश का संकेत तो है ही, जिनसे मानव जीवन भी असुरक्षित होता जा रहा है। इन वर्षों में बढ़ी हुई गर्मी एवं तापमान ने न केवल जीवन को जटिल बनाया बल्कि अनेक लोगों की जान भी गयी। पूरी दुनिया में बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण, जलवायु अराजकता और जैव विविधता विनाश का एक जहरीला मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान में बदल रहा है, संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र को मृत क्षेत्रों में बदल रहा है और मानव जीवन पर तरह-तरह के खतरे पैदा कर रहा है। प्रकृति को पस्त करने, वायु एवं जल प्रदूषण, कृषि फसलों पर घातक प्रभाव, मानव जीवन एवं जीव-जन्तुओं के लिये जानलेवा साबित होने के कारण समूची दुनिया में बढ़ते प्लास्टिक एवं माइक्रोप्लास्टिक के कण एक बड़ी चुनौती एवं संकट है। पिछले दिनों एक अध्ययन में मनुष्य के मस्तिष्क में प्लास्टिक के नैनो कणों के पहुंचने पर चिंता जतायी गई थी। दावा था कि प्रतिदिन सैकड़ों माइक्रोप्लास्टिक कण सांसों के जरिये हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसे तमाम नये राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध-सर्वेक्षण-अध्ययन चेतावनी दे रहे हैं कि हमारी सांसों, प्रकृति, पर्यावरण, पेयजल व फसलों में घातक माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी एक गंभीर संकट है। संकट तो यहां तक बढ़ गया है कि प्लास्टिक के कण पौधों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को प्रभावित करने लगे हैं, जिससे खाद्य श्रृंखला में शामिल कई खाद्यान्नों की उत्पादकता में गिरावट आ रही है। ऐसा निष्कर्ष अमेरिका-जर्मनी समेत कई देशों के साझे अध्ययन के बाद सामने आया है। दरअसल, प्लास्टिक कणों के हस्तक्षेप के चलते पौधों के भोजन सृजन की प्रक्रिया बाधित हो रही है। इस तरह माइक्रोप्लास्टिक की दखल भोजन, हवा व पानी में होना न केवल प्रकृति, कृषि, पर्यावरण वरन मानव अस्तित्व के लिये गंभीर खतरे की घंटी ही है। जिसे बेहद गंभीरता से लिया जाना चाहिए और सरकारों को इस संकट से मुक्ति की दिशाएं उद्घाटित करने के लिये योजनाएं बनानी चाहिए, इसके लिये इस वर्ष की थीम से व्यापक बदलाव की संभावनाएं हैं। माइक्रोप्लास्टिक हमारे वातावरण का एक हिस्सा बन चुके हैं। प्लास्टिक की बहुलता एवं निर्भरता के कारण मौत हमारे सामने मंडरा रही है। हम चाहकर भी प्लास्टिकमुक्त जीवन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं, प्लास्टिक प्रदूषण के खतरों को देखते हुए विभिन्न देशों की सरकारों ने ठान लिया है कि सिंगल यूज प्लास्टिक के लिए कोई जगह नहीं होगी। भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्व में ही देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्लास्टिक कचरे से मुक्त करने की अपील करते हुए।

संक्षिप्त समाचार

भौतिक संपदा के प्रति वैराग्य धारण कर रत्नत्रय धर्म के सहारे मोक्ष मार्ग मिलता है : आर्यिका श्री सृष्टि भूषण माताजी

भोपाल (विश्व परिवार)। परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री सृष्टिभूषण माता जी, आर्यिका श्री विश्वयशमति, श्री विमल मति, क्षुल्लिका श्री आप्त

मति माताजी सहित पंचशील नगर भोपाल में विराजित है।मंदिर में आयोजित धर्म सभा में माताजी ने बताया कि भौतिक सामग्री परिवार, मकान, धन से व्यक्ति को क्षणिक सुख मिलता है वास्तविक सुख सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र रत्नत्रय धर्म धारण करने से प्राप्त होता है। राजेश पंचोलिया एवं समाज अध्यक्ष श्री संतोष कुंदन अनुसार माताजी ने आगे बताया कि भगवान के दर्शन स्तुति पूजा स्वाध्याय आदि धार्मिक कार्य भावपूर्वक निस्वार्थ करना चाहिए। इंद्री सुख क्षणिक है भौतिक सुविधा क्षणिक है इसे विरक्ति भाव आने पर रत्नत्रय धर्म धारण करने से शाश्वत सुख जन्म मरण से, आवागमन से छुटकारा मिलता है।सभी को हर कार्य समय पर धरमपूर्वक करना चाहिए हमारा संबंध, संपर्क अच्छा या बुरा जैसा होगा वैसा हमें फल मिलेगा। लौकिक जीवन में आप चेहरे बदलते रहते हो, देव शास्त्र गुरु हमारे हितेषी मंगलकारी है उनके सामने मायाचारी नहीं होकर सरलता होना चाहिए। धर्म की वाणी सुनकर उसे अपनाना चाहिए तभी हमारा भला होगा।

प्राणवायु बढ़ाने के लिए नालंदा में रोपी हरियाली, आदिश्वर महिला मंडल का कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। बढ़ते वायुप्रदूषण को रोकने और प्राणदायक वायु ऑक्सीजन को बढ़ाने के लिए डीडी नगर स्थित आदिश्वर महिला मंडल द्वारा जी.ई.रोड स्थित नालंदा परिसर में पौधरोपण का कार्यक्रम सोमवार को आयोजित किया गया। मंडल की अध्यक्ष वर्षा जैन सिंघई ने इस मौके पर कहा कि शहरीकरण और विकास के चलते हम हरियाली को खोते जा रहे हैं जिसके कारण प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों और तापमान में बढ़ोतरी जैसी समस्याओं से हम सब जूझ रहे हैं। महिला मंडल की सदस्याओं द्वारा परिसर में आंवला, जामुन, आम, अमरूद, शीशम, सीताफल जैसे फलदार और औषधीय पौधे बड़ी संख्या में रोपे गए। इस मौके पर प्रतिवर्ष पौधे लगाने, उनको संरक्षित करने का संकल्प भी लिया गया। ग्रीन परिधान से सज्जित सदस्याओं ने प्रकृति, पर्यावरण से जुड़े गीतों, कविताओं की प्रस्तुति भी दी। इस अवसर पर वर्षा जैन, अनीता जैन, श्रृद्धा जैन, राजुल जैन, डॉ. मंजुला जैन, मीना जैन, अमिता जैन, चंद्रप्रभा जैन, आरती जैन, मृणाल जैन, डॉली जैन, सुमन जैन, सुनीता जैन, संगीता जैन, एम. के जैन, नंदा जैन सहित परिसर के कर्मचारियों ने भी बढ़-चढ़कर पौधरोपण किया।

राजस्व विभाग की समीक्षा में महापौर मधुसूदन यादव ने स्व विवरणी की जॉच कर डिमाण्ड दुरूस्त कर वसूली के दिये निर्देश

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। इस वित्तीय वर्ष में सत प्रतिशत राजस्व वसूली के लिए सुनियोजित अभियान चलाकर राजस्व वसूली करना है। वसूली के लिए सर्वप्रथम करदाताओ के द्वारा जो विवरणी भरा गया है उसकी जॉच करे और उसके आधार पर सम्पतिकर वसूली करे। आज निगम सभागृह में आयोजित राजस्व विभाग की समीक्षा बैठक में महापौर श्री मधूसूदन यादव ने वार्ड मोहर्रिरो से कहा। उन्होंने आगे कहा कि शहर में कई नये मकान, दुकान, भवन आदि का निर्माण हो रहा है, जिसकी संबंधित वार्ड प्रभारी जॉच करे और संबंधित से विवरणी भरा वसूली करना सुनिश्चित करे। उन्होंने कहा कि शहर में कई मोबाईल टॉवर, स्थापित है, इसी प्रकार होडिग्स भी लगे हुए है उन्हें भी नोटिस जारी कर उनसे सम्पत्तिकर वसूलना सुनिश्चित करे। सभी सहायक राजस्व निरीक्षक अपने अपने प्रभारित वार्ड के सभी मकान, भवन तथा रिक्त भूमि का सर्वे कर उसकी नम्बरिंग कर सूची तैयार करे, जिससे सही कर की वसूली होगी। हमारा सम्पत्तिकर शहर में निर्माण के हिसाब से कम है, जिसे आप सबको दुरूस्त कर उसके अनुसार वसूली करना है, तभी हम शासन लक्ष्य के अनुरूप वसूली कर सकते है।

साधना करोगे तो उसमें विघ्न आएंगे, उन विघ्नों को विघ्न कर दे वही तो योगी : आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज

भोपाल (विश्व परिवार)। विघ्नों से प्रभाभित मत होंना विघ्नों को बिघ्न कर देना, साधना करोगे तो उसमें विघ्न आएंगे, उन विघ्नों को विघ्न कर दे वही तो योगी है। उपरोक्त उदगार चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के पांचवे दिवस व्यक्त किये।

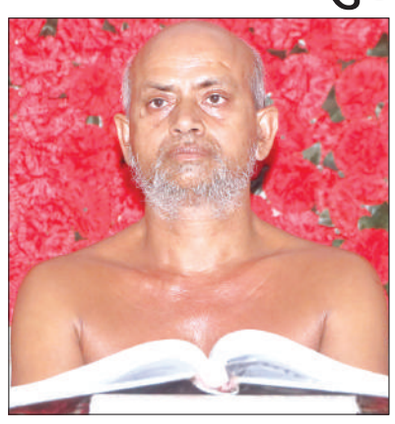

उन्होंने कहा कि पैर में कांटा लग जाऐ तो उसे सुई से ही निकाला जाता है लेकिन सुई में ही कांटा हो तो? जैसे एक मां बटोही में दाल बनाने के लिये बघार का उपयोग करती है तो बह दाल स्वादिष्ट बन जाती है उसी प्रकाश यह द्वदशांग बाणी है जो जितना अधिक अध्यन करेगा वह उतने अच्छी तरह से उस ज्ञान को परोस सकेगा।आचार्य समन्तभद्र और आचार्य कुंद कुंद स्वामी ने साधुओं को एक जगह रुकने का उपदेश नहीं दिया बल्कि चलते रहने का उपदेश दिया उन्होंने विदिशा के मुमुक्षु सुरेश बकील की ओर इशारा करते हुये कहा कि जबलपुर से हमारे पीछे पड़े हुये थे, उन्होंने कहा कि जैसे गाय को तो लाना है, और उसकी बछिया को पकड़ लो उसकी मां अपने आप चली आयेगी उसी प्रकार किसी साधू को बुलाना हो तो सिद्धों की आराधना कर लो गुरु जी आ ही जाऐंगे आचार्य श्री ने कहा कि जैसे फसल के आने से किसान मुस्कुराते है, उसी प्रकार साधुओं के आने से सकल संस्कृति मुस्कराती है अपनी बाणी को बीणा बना लो और देखो कैसे लोग खिंचे खिंचे चले आते है? देख रहे हो ज्ञानिओ यह भेलसा की तोप है यह भगवान शीतलनाथ की पवित्र भूमी है में भी वही बात कह रहा हुं जो आचार्य समन्तभद्र या आचार्य कुंदकुंद ने कही है उन्होंने कहा कि बक्ता को कभी ऐसी बात नहीं करना चाहिये जिससे समाज में भेद उत्पन्न हो जाये, उन्होंने कहा कि एक जीव की बाणी बीणा बन जाती है, तो एक जीव की बाणी बांण बन कर समाज को खंड खंड कर देती है। उन्होंने कहा कि आचार्य विनोबा भावे ने सर्वोदय विद्यालय खोले वह सर्वोदय शव्द किसकी दैन है?उन्होंने सूत्र सुनाते हुये कि यह जैनाचार्य समन्तभद्र स्वामी हजारों वर्ष पूर्व लिखकर गये है जिसमें संपूर्ण जीव के कल्याण की बात कही गयी है आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने श्रमण सुत्तं ग्रंथ का प्रकाशन किया जिसमें दिगंम्वर स्वेताम्बर स्थानक तारण पंथी चारों संप्रदाय का उल्लेख है उन्होंने कहा कि जैसे बच्चा मां की गोद में आनंद महसूस करता है, उसी प्रकार जिनवाणी मां को सुनने बाला कभी थकान महसूस नहीं करता उन्होंने कहा अपने ज्ञान का कभी अहंकार और राग मत करना उन्होंने कहा कि आपके व्याख्यान में विषय होंना चाहिये विष नहीं बक्ता के व्यख्यान में वासना का नहीं साधना का व्याख्यान होंना चाहिये जैसे एक मां दूर से आये अपने लाड़ले को खीर खिलाती है बेटा प्रसन्न हो जाता है उसी प्रकार %हे साधू यह दूर दूर से आऐ श्रावकों को विषय मिलना चाहिये वासना नहीं। उन्होंने कहा कि इस देश में प्रकांड विद्वान अष्टसहस्त्री भाषाओं के ज्ञाता साधू हुये है, उन योगी के चरणों में देव लोटते थे आचार्य श्री ने कहा कि मित्र साधना की ओर चलोगे तो सिद्धी अपने आप आपके पीछे पीछे चली आऐगी।

उपरोक्त जानकारी देते हुये श्री सकल दि. जैन समाज के प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया आज की धर्म देशना में राघव जी पूर्व सांसद एवं पूर्व वित्तमंत्री मध्यप्रदेश शासन तथा नगरपालिका की अध्यक्षा श्रीमति प्रीती राकेश शर्मा उपस्थित हुये सकल दि. जैन समाज की ओर से सभी पदाधिकारियों ने तथा नगरपालिका के उपाध्यक्ष संजय दिवाकीर्ती, कोषाध्यक्ष पवन जैन रायल सिटी ने उनका स्वागत किया। **-अविनाश जैन**

स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामी जी का नांदणी से कुंथलगिरी और कुंथलगिरी से नांदणी तक पद विहार

नांदणी (विश्व परिवार)। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद कोल्हापुर के कार्याध्यक्ष श्री अभिषेक अशोक पाटील, कोल्हापुर ने कहा कि, स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामीजी का नांदणी से कुंथलगिरी और कुंथलगिरी से नांदणी तक पद विहार शुरु हैं। नांदणी के स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामीजी नांदणी से पद विहार करते हुये जयसिंगपुर, चिपरी पंचकल्याणक, कुंभोज, दूधगांव पंचकल्याणक, समडोली, डिग्रज, नांद्रे, कळंबी पांचकल्याणक कर के कुंथलगिरी पहूँचे। वहाँ उन्होने विधान और शिबीर का आयोजन किया। कुंथलगिरी से नांदणी कि ओर विहार शुरु हैं। स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक स्वामीजी तासगांव (महाराष्ट्र) में विराजमान हैं। जैन धर्म के विकास और संरक्षण के हेतू भारतवर्ष में भट्टारक पीठोंकी निर्मिती हुई है। इन सभी भट्टारक पीठों में स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी मठसंस्थान नांदणी, करवीर (कोल्हापूर) यह आद्य पीठ है। प्राचीन भारत के दिल्ली, पिंनगोंडी, जिनकंची और करवीर (नांदणी) ऐसी जिनसेन मठ की परंपरा चलती आ रही है। करवीर मठ संस्थांन के कोल्हापूर, नांदणी, तेरदाळ और बेलगांव यह चार शाखापीठ है ; इसलिये जिनसेन मठ की वास्तू अतिभव्य है। नांदणी स्थित मठ का इतिहास 1300 वर्ष पूराना है। नांदणी मठ के आधीपत्य में दक्षिण महाराष्ट्र और उत्तर कर्नाटक के 743 गांव समाविष्ट है। इन सभी गांव में जैन धर्म के सभी धार्मिक महोत्सव, विधिविधान, पंचकल्याणक, धर्म का प्रसार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामीजी के आदेश से और आशीर्वाद से सानंद संपन्न होते है।

मंत्री अरुण साव से पंडरी कपड़ा मार्केट एवं थोक बाजार निगम मार्केट डूमरतराई की समस्या के लिए मिले चेंबर पदाधिकारी

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के संरक्षक एवं भूतपूर्व विधायक श्रीचंद सुंदरानी, प्रदेश अध्यक्ष सतीश थौरानी, सलाहकार सरल मोदी के नेतृत्व में नगर प्रशासन मंत्री अरुण साव से आज मुलाकात की। चेंबर के कार्यकारी अध्यक्ष राजेश वासवानी ने बताया कि डूमरतराई होलसेल मार्केट को पूर्ण रूप से फ्री होल्ड कर दिया गया है किंतु निगम थोक बाजार महादेव व्यापार संघ को फ्री होल्ड अभी तक नहीं किया गया है इसके लिए आज होलसेल मार्केट महादेव व्यापारी महासंघ के अध्यक्ष तनेश आहूजा के नेतृत्व में आवेदन दिया गया।

पंडरी कपड़ा मार्केट की दुकानों को नगर निगम के द्वारा कुछ दिन पूर्व सील कर दिया गया है जबकि बहुत सारे दुकानदारों के पिछली सरकार के द्वारा नियमितीकरण कर दिया गया है एवं शटर खोलने का उनके पास आदेश भी है इसके बावजूद भी नगर निगम उन दुकानों को सील कर दिया पंडरी कपड़ा मार्केट व्यापारी 50 वर्ष से ज्यादा इन दुकानों पर व्यापार कर रहे है पिछली सरकार में उनकी दुकानों पर सील किया गया था बाद में नियमित करवा दिया गया फिर उनकी दुकानों को खोला गया था। चेंबर अध्यक्ष ने कहा की पंडरी कपड़ा मार्केट की दुकान का नियमितीकरण हो चुका है और पंडरी कपड़ा मार्केट की बहुत सी दुकानों को जो नई बनी है उन को भी परमिशन दी गई है पंडरी कपड़ा मार्केट के अध्यक्ष सरल मोदी रायपुर होलसेल एंड डीलर्स के कार्यकारी अध्यक्ष जसप्रीत सिंह सलूजा ने कहा की जो पंडरी कपड़ा मार्केट में पार्किंग की समस्या है और जो सिटी मॉल के लोग अंदर गाड़ी न खड़ी करके वहा स्थित रोड पर खड़ी करने के कारण समस्या होती है। प्रशासन मंत्री अरुण साव ने सब की बातें सुनने के बाद सबको आश्वासन दिया कि जल्दी ही निगम कमिश्नर से बात कर इस समस्या का समाधान करेंगे इस मौके पर चेम्बर ऑफ कॉमर्स के श्रीचंद सुंदरानी, सतीश थौरानी, सरल मोदी, निकेश बरडिया, राधाकिषन सुंदरानी, राजेश वासवानी, जसप्रीत सिंह सलूजा आदि मौजूद थे।

प्रदेश में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी, रोहंगिया, पाकिस्तानियों को बाहर किया जाये : कांग्रेस

घुसपैठिया छत्तीसगढ़ के भोले भाले लोगों के जमीन, घर पर कब्जा कर रहे हैं, केंद्र का आदेश का पालन नहीं हो रहा

केंद्र सरकार ने अस्थायी वीजा को रद्द कर दिया फिर विदेशी नागरिक छत्तीसगढ़ में क्यों है

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ से घुसपैठियों को बाहर करने की मांग करते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि डबल इंजन की सरकार देश की आंतरिक सुरक्षा को लेकर गंभीर नहीं है। विदेशी नागरिक आखिर किसके संरक्षण में छत्तीसगढ़ में रह रहे है? छत्तीसगढ़ में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी, रोहंगिया, पाकिस्तान एवं अन्य विदेशी नागरिकों को तत्काल बाहर किया जाए। केंद्र सरकार के आदेश का कड़ाई से पालन नहीं हो रहा। घुसपैठिया छत्तीसगढ़ के भोले भाले लोगों के जमीन घर पर कब्जा कर रहे हैं उनकी योजनाओं के पैसे पर डाका डाल रहे हैं। छत्तीसगढ़ में वैसे ही रोजगार का संकट है। घुसपैठिया छत्तीसगढ़ में व्यापार व्यवसाय करेंगे तो छत्तीसगढ़ के युवा क्या करेंगे? सरकार पूर्व में रह रहे विदेशी नागरिकों के बस्तियों में कॉलोनी में छापामार कार्रवाई करें उनसे पूछताछ करें कि उनके बीच कोई विदेशी घुसपैठियों तो नहीं है जिनके पास भारत के नागरिकता नहीं है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि केंद्र सरकार की नाकामी के चलते विदेशी घुसपैठिया छत्तीसगढ़ तक पहुंचे हैं। घुसपैठियो को रोकने की जिम्मेदारी केंद्र सरकार के ऊपर में है। केंद्र सरकार बाहरी आतंकी और घुसपैठियों को रोकने में नाकाम हो गई है जिसका नुकसान देश और प्रदेश को हो रहा है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा के नेता घुसपैठियो की सूची दिखाते थे। हजारों घुसपैठियों होने का दावा करते थे, 17 महीने से अधिक सरकार हो गया है लेकिन अभी तक 100 घुसपैठियों को भी पकड़ कर प्रदेश से बाहर नहीं कर पाए। केंद्र सरकार के आदेश का पालन नहीं हो रहा है। केंद्र सरकार ने सभी अस्थाई वीजा को रद्द कर दिया है, उसके बावजूद छत्तीसगढ़ में विदेशी नागरिक सरकार के संरक्षण में रुके हुए हैं। भाजपा नेताओं को इन घुसपैठियो को संरक्षण दे रहे, यह छत्तीसगढ़ के हित में नहीं है।

सेन समाज का सम्मान समारोह : प्रतिभाओं का सम्मान समाज के अन्य लोगों को आगे बढ़ने की देता है प्रेरणा : राज्यपाल

रायपुर (विश्व परिवार)। समाज की प्रतिभाओ को सम्मानित करना उनके भीतर सकारात्मक प्रेरणा जगाने का उत्कृष्ट प्रयास है। जब हम किसी व्यक्ति की मेहनत और उपलब्धियों को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करते है तो हम सिर्फ उसका मनोबल नही बढ़ाते, बल्कि समाज के अन्य लोगों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज सेन समाज द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में यह विचार व्यक्त किए। सेन समाज के महिला विंग द्वारा आयोजित उक्त कार्यक्रम में राज्यपाल द्वारा समाज के सभी जिलों के महिला अध्यक्षों, प्रतिभावान विद्यार्थियों, खिलाड़ियों एवं विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वालों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल श्री डेका मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि सेन समाज का इतिहास गौरवशाली और प्रेरणादायक है। यह समाज न केवल पारंपरिक बाल केश कला में निपुण रहा है बल्कि समय के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवसाय के अनेक क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रहा है। यह प्रतिभा सम्मान समारोह समाज की उन्नति और समाज के लोगों की मेहनत का प्रतीक है। राज्यपाल ने सेन समाज की महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए महिलाओं ने यह सिद्ध किया है कि सशक्त नारी ही सशक्त समाज की नींव है। महिला विंग ने इस आयोजन के माध्यम से संगठन को मजबूत किया है और आने वाली पीढ़ियों को दिशा देने का कार्य किया है। आज की महिलाएं घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ सामाजिक दायित्वों को भी अच्छी तरह निभा रही हैं। यह परिवर्तन समाज को नई ऊर्जा दे रहा है। श्री डेका ने कहा कि हमे यह भी याद रखना जरूरी है कि सम्मान केवल पद, डिग्री या पैसे से नहीं मिलता बल्कि हमारे आचरण, सेवा एवं समर्पण से प्राप्त होता है। उन्होंने समाज के हर उस व्यक्ति को नमन किया जो निस्वार्थ भाव से अपने आस-पास के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे है। श्री डेका ने भारत रत्न स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर का जिक्र किया जो बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं एक जन नायक थे। श्री डेका ने कहा कि छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में, जहां जनजातीय, ग्रामीण और शहरी सभी प्रकार की सामाजिक संरचनाएं एक साथ जुड़ी हुई है वहां सामाजिक संगठनों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने आशा व्यक्त किया कि सेन समाज आने वाले वर्षों में प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की पहुंच बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा। उन्होंने समाज के युवाओं को आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण, उद्यमिता और डिजिटल शिक्षा की ओर प्रेरित करने की आवश्यकता बताई जिससे वे आत्म निर्भर बन सके, साथ ही अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपरा को भी बनाए रखने की बात कही।

हल्दी वार्ड में सामुदायिक भवन, सीमेंट रोड तथा स्कूल में अतिरिक्त कमरा व शौचालय निर्माण के लिए महापौर ने किया भूमिपूजन

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। वार्ड विकास की कडी में नगर निगम द्वारा वार्डो में विभिन्न विकास कार्य कराये जा रहे है, इसी कडी में आज वार्ड नं. 51 हल्दी में आधोसंरचना मद अंतर्गत 10-10 लाख रूपये की लागत से सामुदायिक भवन एवं रोड सीमेटीकरण के अलावा पी.एम.श्री. योजनांतर्गत 7 लाख रूपये की लागत से स्कूल में अतिरिक्त कमरा व 1.67 लाख रूपये की लागत से नवीन शौचालय निर्माण कराने आज महापौर श्री मधुसूदन यादव ने पूजा अर्चना कर गैती चलाकर भूमिपूजन किया। भूमिपूजन में महापौर परिषद के प्रभारी सदस्य सर्वश्री डीलेश्वर प्रसाद साहू ,राजा माखिजा,राजेश जैन रानू, हल्दी के पार्षद श्री चंद्रकृत साहू, पार्षद श्री रवि सिन्हा, श्री सतीश साहू, श्री संदीप बघेल, पूर्व पार्षद श्री विजय राय, श्री शरद सिन्हा सहित समाजिक कार्यकर्ता श्री गोलू गुप्ता, शाला विकास के अध्यक्ष श्री सतानंद साहू, प्रधानपाठक श्री प्रमोद सिंह राजपूत विशेष रूप से उपस्थित थे।

भूमिपूजन अवसर पर महापौर श्री यादव ने कहा कि शासन द्वारा स्वीकृत राशि से शहर के वार्डो में मूलभूत सुविधा बिजली, पानी, रोड, नाली के अलावा सामुदायिक भवन, मंच, उद्यान, मुक्तिधाम उन्नयन आदि कार्य कराये जा रहे है। इसी तारतम्य में हल्दी में सामुदायिक भवन, रोड तथा स्कूल में कमरा व शौचालय निर्माण कार्य के लिए भूमिपूजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने गरीब तबके के नागरिको के बच्चो को उच्च शिक्षा देने पी.एम.श्री योजना लागू की है। जिससे समान्य परिस्थिति के बच्चे भी निजी स्कूलो की तरह सर्वसुविधायुक्त स्कूल में शिक्षा ग्रहण करेगे। इसके लिए उन्होंने स्कूलो का उन्नयन कर सभी सुविधाए उपलब्ध करा रहे है। इसी कडी में हल्दी स्कूल में पी.एम.श्री योजना के तहत स्कूल उन्नयन के लिए राशि प्राप्त हुई जिसका कार्य जल्द प्रांरभ होगा और हल्दी के बच्चे भी अच्छी शिक्षा ग्रहण करेंगे।

कार्यक्रम के प्रांरभ में वार्ड के सुनील साहू, डिम्पल श्रीवास, पुनूराम साहू, सुंदर साहू, लखन निषाद, विदेशी यादव, पंकज साहू, प्रवीण चक्रधारी, गेंदलाल सोनकर, सुरेश यादव, धन्नू ठाकुर, सोहन सोनकर, धनसिंह सहित वार्ड की महिलाओ ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। इस अवसर पर नगर निगम की उप अभियंता श्रीमती ज्योति साहू, लोक निर्माण के उप अभियंता श्री के.के. बघेल सहित स्कूल के शिक्षक व वार्डवासी उपस्थित थे।

एनआईटी रायपुर ने मशीन इंटेलिजेंस एंड एडवांसमेंटस इन इंटरनेट ऑफ थिंग्स पर ऑनलाइन 10 दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का किया उद्घाटन

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने 17.06.2025 को मशीन इंटेलिजेंस एंड एडवांसमेंटस इन इंटरनेट ऑफ थिंग्स (MIIoT - 2025) पर 10 दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP) का उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक्स और आईसीटी अकादमी, MeitY, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य फैकल्टी मेम्बर्स, शोधकर्ताओं और औद्योगिक पेशेवरों को मशीन इंटेलिजेंस, ढ्श्ङ्म नवाचारों और उनके वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों में अत्याधुनिक ज्ञान से लैस करना है।

उद्घाटन सत्र में सम्मानित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति देखी गई। प्रो. एन. वी. रमना राव, निदेशक (एनआईटी रायपुर) ने कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक और मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उन्होंने अत्याधुनिक क्षेत्रों में अपस्किलिंग और फैकल्टी डेवलपमेंट के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स प्रौद्योगिकियों के बीच बढ़ते संबंध को भी संबोधित किया जो विभिन्न क्षेत्रों में अगली पीढ़ी के नवाचारों को आगे बढ़ा रहे हैं। इस अवसर के सम्माननीय अतिथि प्रो. श्रीहरि राव पत्री (मुख्य अन्वेषक, ई एंड आईसीटी अकादमी, एनआईटी वारंगल) थे, जिन्होंने उन्नत प्रणालियों और कनेक्टेड प्रौद्योगिकियों के भविष्य पर व्यावहारिक टिप्पणियों के साथ सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम में विशेष अतिथियों के रूप में प्रो. सुभोजित घोष (अध्यक्ष, कंटीन्यूइंग एजुकेशन सेल, एनआईटी रायपुर), डॉ. ए.एस. रघुवंशी (मुख्य अन्वेषक, ई एंड आईसीटी अकादमी, एनआईटी रायपुर) और डॉ. सत्य प्रकाश साहू (प्रभारी एचओडी, आईटी) एनआईटी रायपुर भी इसमें शामिल हुए।

यह एफडीपी अकादमिक चर्चा, शोध आदान-प्रदान और अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियों में क्षमता निर्माण के लिए एक जीवंत मंच के रूप में काम करने का वादा करता है। डॉ. सुवेंदु रूप, एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. दीपिका अग्रवाल और डॉ. कपिल कुमार सोनी, सहायक प्रोफेसर, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग इस एफडीपी के समन्वयक हैं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354

संक्षिप्त समाचार

सिंधु भवन में शनिवार को सत्संग के अमृत वचनों का आत्मिक आनंद

जगदलपुर (विश्व परिवार)। हरिराया सतगुरु बाबा ईश्वरशाह साहिब जी की अपार दया मेहर से रायपुर के कृपापात्र सेवकों द्वारा हरे माधव सत्संग सिंधु भवन में होना हैं. श्री पूज्य सिन्धी पंचायत अध्यक्ष मनीष मूलचंदानी ने जानकारी दी सत्संग के बैठक में उपस्थित रह कर ध्यान पूर्वक अमृत वचनों का आत्मिक आनंद तभी होगा जब मन एकाग्र हो, 21 जून शनिवार शाम 7 बजे से सिंधु भवन में सत्संग व भजन रायपुर से कृपापात्र सेवको द्वारा हरे माधव सत्संग होना हैं जिसमे कमल कुमार शादीजा जी के मुखारविंद से अमृत वचन का श्रवण लाभ मिलेगा साथ भजन मंडली भी रहेगी इस सत्संग के आयोजन में दीपक आडवाणी, सुनील थारवानी, बंटी दुर्गानी, सूर्यांश जेठानी, हरीश नागवानी अपनी सेवाएं देंगे. सिन्धी पंचायत के सहसचिव बृजलाल नागवानी ने बताया हरे माधव सत्संग का प्रमुख स्थान कटनी में हैं शनिवार शाम को समय से सिंधु भवन में पहुंचकर आप सभी स्नेही स्वजन सपरिवार पधारकर सत्संग के अमृत वचनों का श्रवण जरूर करें सत्संग पश्चात भंडारे प्रसाद से मुख पवित्र करें.

प्रधानमंत्री मोदी ने देश को दी भ्रष्टाचार मुक्त सरकार: गोवर्धन मांझी

गरियाबंद (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी मंडल गरियाबंद के तत्वावधान में मंगलवार को नगर में विकसित भारत संकल्प सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में केंद्र की मोदी सरकार के 11 वर्षों की उपलब्धियों, जनकल्याणकारी योजनाओं और विकसित भारत 2047 के विजन पर चर्चा हुई। मुख्य वक्ता गोवर्धन सिंह मांझी ने कि कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को भ्रष्टाचार मुक्त, पारदर्शी और जवाबदेह सरकार दी है। मोदी के नेतृत्व में देश ने आर्थिक, सामाजिक और बुनियादी क्षेत्र में प्रगति की है। पिछले 11 वर्षों में देशभर में सड़क, बिजली, पानी, गैस कनेक्शन, डिजिटल सेवाओं जैसी मूलभूत सुविधाएं गांव-गांव तक पहुँची हैं। काशी, उज्जैन जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों का जीर्णोद्धार कर भारत के गौरव को फिर से स्थापित किया गया है। जिला पंचायत अध्यक्ष गौरी शंकर कश्यप ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वह कार्य कर दिखाए हैं, जो दशकों से अधूरे पड़े थे। राम मंदिर निर्माण हो, तीन तलाक की समाप्ति हो, या कश्मीर से धारा 370 हटाने का फैसला मोदी के कार्यकाल में ही पूरा हुआ। नगर पालिका अध्यक्ष रिखीराम यादव ने कहा मोदी जी ने अपने कार्यकाल की शुरुआत गरीबों की चिंता से की। उज्ज्वला योजना से माताओं-बहनों को धुएं से मुक्ति मिली, शौचालय निर्माण से स्वच्छता और सम्मान की भावना आई। जिला मंत्री मिलेश्वरी साहू ने कहा कि जनधन योजना से करोड़ों गरीबों के खाते खुले, आवास योजना से लाखों को अपना घर मिला। स्वागत भाषण मंडल अध्यक्ष सुमित पारख ने दिया। संचालन मंडल महामंत्री परस देवांगन और आभार प्रकाश सोनी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ नेता बलदेव सिंह हुंदल, अनूप भोसले, घनश्याम सिन्हा, नगर पालिका उपाध्यक्ष आसिफ मेमन, पूर्व उपाध्यक्ष सुरेंद्र सोनटेके, सभापति रेणुका साहू, मधु देवांगन, बिंदु सिन्हा, सागर मयाणी, मंडल महामंत्री किशन कंड्रा, फारुख चौधरी, टीकम साहू, रिजवान मेमन, डागेश्वर दुबे, प्रकाश यादव, पुष्पक देवांगन, वीरेंद्र साहू, सलीम खान, प्रकाश सोनी, गोविंद तिवारी, सरला उइके, वंश गोपाल सिन्हा, खेम सिंह बघेल, पप्पू देवांगन, परमानंद नेताम, प्रतीक सिंह, नमन सेन, सौरभ पाण्डेय, उमेश सिंह सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

घोटाले में लिप्त पूर्व महापौर को न्यायालय ने किया तलब, महापौर संजय पांडे करवाएंगे एफआईआर : सुशील मौर्य

कांग्रेस पार्टी जो कहती थी उस पर मोहर लगा दिया, महापौर पांडे सार्वजनिक रूप से दे अपना स्पष्टीकरण

शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष सहित कांग्रेस पदाधिकारियों ने राजीव भवन में की प्रेसवार्ता

जगदलपुर (विश्व परिवार)। आज संभाग मुख्यालय राजीव भवन में पूर्व महापौर सफ़िरा साहू द्वारा महापौर निधि में किए गए घोटाले को लेकर प्रेसवार्ता का आयोजन किया.. जिसे बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी शहर अध्यक्ष सुशील मौर्य सहित अन्य कोंग्रेस पदाधिकारियों के द्वारा संबोधित किया गया....

शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने कहा कांग्रेस पार्टी ने आरटीआई के माध्यम से पूर्व महापौर सफ़िरा साहू के द्वारा किए गए भ्रष्टाचार को लेकर न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था जिस पर माननीय न्यायालय ने संज्ञान लेते हुए पूर्व महापौर को 20 जून को हाजिर होने का आदेश दिया है कुल मिलाकर कांग्रेस पार्टी जो कहती थी उस पर मोहर लगा दिया गया है पूर्व महापौर सफ़िरा साहू ने शहर के हर एक वार्डो में अखंड भ्रष्टाचार किया है कांग्रेस पार्टी ने इस भ्रष्टाचार को लेकर पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेश राय सहित अन्य कांग्रेस पदाधिकारियों ने एक लंबी लड़ाई लड़ी है जिसको लेकर न्यायालय में हमारे एडवोकेट संकल्प दुबे के द्वारा इस विषय पर कार्य कर अंजाम तक पंहुचाया गया जो भाजपा सरकार कहती थी आरोप लगाती थी उस पर ये कुछ नहीं कर पाए पर कांग्रेस पार्टी ने एक लंबी लड़ाई लड़ी और अब जो पूर्व महापौर सफ़िरा साहू पर जो भ्रष्टाचार के पुलिंदा खुलते जा रहे हैं तो क्या महापौर संजय पांडे पूर्व महापौर के खिलाफएफआईआर दर्ज करवाएंगे... ? जो आम जनता का बंदरबाट पूर्व महापौर सफ़िरा साहू ने किया है इसको लेकर संजय पांडे का क्या स्टैंड है इसको उन्हें सार्वजनिक रूप से क्लियर करना चाहिए!... साथ ही किसी भी जनप्रतिनिधि और जिला प्रशासन द्वारा अगर भ्रष्टाचार किया जाएगा तो कांग्रेस पार्टी न्यायालय के माध्यम से सजा दिलाने का कार्य करेगी बस्तर में किसी अफसरशाही हावी नहीं होने दिया जाएगा... कांग्रेस शासनकाल में बहुचर्चित जगदलपुर महापौर सफीरा साहू पर महापौर निधि के करोड़ों रुपयों के भ्रष्टाचार का मुद्दा यूं तो तत्कालीन मुख्य विपक्षी दल भाजपा ने जोर-शोर से उठाया था, वर्तमान महापौर संजय पांडे उस दौरान सफीरा साहू को पैर के नाखून से लेकर सर के बाल तक भ्रष्टाचार में डूबे होना बताया था,पर पूर्व महापौर सफीरा साहू के भाजपा प्रवेश करते ही भाजपा ने इस बहुचर्चित महापौर निधि घोटाले को ठंडे बस्ते में डाल दी थी परंतु भाजपा के आरोपों की जांच और आरोपों को सिद्ध करने के लिए जिला कांग्रेस कमेटी और पूर्व निगम उप नेताप्रतिपक्ष राजेश राय ने आर टी आई के माध्यम से भ्रष्टाचार को उजागर किया और न्यायालय की शरण में पहुंचे,अब न्यायालय ने भी तथ्यों और सबूतों को ध्यान में रखते हुए पूर्व महापौर सफीरा साहू को आगामी 20 जून को न्यायालय में हाजिर होने का आदेश दिया है कुल मिलाकर कांग्रेस ने अंजाम तक पंहुचाने का कार्य किया है...वरिष्ठ अधिवक्ता संकल्प दुबे ने बताया न्यायलय के सामने हमने अपना पक्ष रखा था और नए कानून के एनएसएस में जो प्रोविजन है और इसके तहत जो अभियुक होता है उसे अपना पक्ष रखने का मौका मिलता है और इसी के तहत पूर्व महापौर सफ़िरा साहू को न्यायालय ने तलब किया है अगर वह न्यायालय में पेश नहीं होती है तो न्यायालय अपना आगे का निर्णय रखेगा...और हम चाहते हैं कि पूर्व महापौर आए और अपना स्पष्टीकरण दे और जो भी मामला बनेगा पूरा रजिस्टर्ड होगा और उसे अंजान तक पंहुचने का कार्य हम करेंगे.... नेता प्रतिपक्ष राजेश चौधरी ने इसे सच्चाई की जीत की दिशा में न्यायालय के बढ़ते कदम बताया है और कहा है कि भाजपा भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों से समझौता कर सकती है, उन्हें अपनी पार्टी में लेकर संरक्षण दे सकती है परंतु कांग्रेस पार्टी ना कभी भ्रष्टाचार के साथ समझौता किया है और ना कभी करेगी,जनता की गाढ़ी कमाई को जो भी डकारना चाहेगा उसके खिलाफ हम हमेशा खड़े रहेंगे।

इस प्रेसवार्ता के दौरान प्रभारी महामंत्री जाहिद हुसैन,रविशंकर तिवारी, संजय पाणिग्रही, शुभम् यदु,आभाष महंती,ज्योति राव,सायमा अशरफ शादाब अहमद आदि मौजूद रहे....

गरियाबंद पुलिस द्वारा उत्कृष्ट सेवा के लिए पांच पुलिसकर्मियों को मिला 'कॉप ऑफद मंथ' सम्मान

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जनसेवा एवं कानून व्यवस्था के प्रति समर्पण भाव से ड्यूटी निभाने वाले पुलिसकर्मियों के प्रोत्साहन हेतु गरियाबंद पुलिस द्वारा शुरू की गई सराहनीय पहल 'कॉप ऑफ द मंथ' के अंतर्गत मई 2025 माह के लिए पांच अधिकारी/कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए चुना गया है। इस पहल का उद्देश्य पुलिस बल में सेवा भावना को बढ़ावा देना एवं समाज के प्रति जिम्मेदारियों को और बेहतर ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करना है। चयनित पुलिसकर्मियों को उनके विशिष्ट कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

गरियाबंद पुलिस अधीक्षक द्वारा इस पहल की सराहना करते हुए कहा गया कि कॉप ऑफ द मंथ जैसी योजना से न केवल पुलिसकर्मियों का मनोबल बढ़ता है, बल्कि आम नागरिकों में भी पुलिस के प्रति विश्वास सुदृढ़ होता है। यह सराहनीय पहल भविष्य में भी जारी रहेगी और हर माह उत्कृष्ट सेवा देने वालों को सम्मानित किया जाएगा।

सम्मानित अधिकारी/कर्मचारी इस प्रकार हैं:

निरीक्षक अमृत साहू (थाना राजिम)

जिले में म्यूल खाताधारकों की पहचान, जिला बदर कार्रवाई, नए गुंडा-बदमाशों की हिस्ट्री शीट खोलने एवं धारा 129 बीएनएसएस के अंतर्गत प्रभावी कार्यवाही में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

निरीक्षक शिवशंकर हुर्रा (थाना प्रभारी, मैनपुर)

लूट, गांजा तस्करी एवं बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों के आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी कर मामलों को सुलझाने में विशेष योगदान रहा।

आरक्षक जय कंसारी (थाना देवभोग)

मुखबिर की सूचना पर 56 किलो ग्राम गांजा जब्त करवाकर आरोपी को गिरफ्तार करने में प्रमुख भूमिका निभाई।

आरक्षक सतीश गिरी गोस्वामी (आर. 154, स्पेशल टीम, गरियाबंद)

60 लाख रुपये की धोखाधड़ी के मामले में म्यूल खाताधारकों की गिरफ्तारी सुनिश्चित कर बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया।

आरक्षक कृतेश प्रजापति (आर. 295, स्पेशल टीम, गरियाबंद)

उपरोक्त ही मामले में सटीक सूचना एवं टीमवर्क के माध्यम से धोखाधड़ी के आरोपी म्यूल खाताधारकों को गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

खनिज नीति विफल, रेत माफिया बेलगाम

रेत माफिया और सरकार की गठजोड़ पर खामोश प्रशासन, पत्रकार बन रहे निशाना

गरियाबंद (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की धरती पर विकास की धारा तो बह रही है, लेकिन इसी धारा में बह रही है सच्चाई, ईमानदारी और जवाबदेही। प्रदेश की भाजपा सरकार, विशेषकर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अगुवाई में, बीते दो वर्षों से रेत नीति का केवल खाका ही खींचती रह गई। नई खनिज नीति की घोषणाएं तो हुईं, लेकिन वह फाइलों से निकलकर कभी ज़मीनी हकीकत नहीं बन पाई। इस लचर रवैये का खामियाजा आज प्रदेश के ग्रामीणों, निर्माणकर्ताओं और सबसे ज्यादा सच दिखाने वाले पत्रकारों को भुगतना पड़ रहा है। जहां एक ओर सरकार और प्रशासन आंखें मूंदे बैठे हैं, वहीं दूसरी ओर रेत माफिया खुलेआम गुंडागर्दी कर रहे हैं — कभी ग्रामीणों से भिड़ंत, तो कभी पत्रकारों पर जानलेवा हमले।

पत्रकारों पर बढ़ते हमले: सच्चाई की कीमत- हाल ही में गरियाबंद ज़िले में रेत के अवैध खनन की खबर प्रकाशित करने वाले एक पत्रकार पर हमला हुआ। इससे पहले खनिज अधिकारियों पर हुए हमले में मुख्यमंत्री के रिश्तेदार का नाम तक सामने आया था। लेकिन नतीजा वही — मामला दबा, आरोपियों को संरक्षण मिला, और अब पत्रकार निशाने पर हैं।

खनिज विभाग में कर्मचारियों की भारी कमी- राज्य सरकार की लापरवाही यहीं खत्म नहीं होती। जिन विभागों से करोड़ों का राजस्व आ सकता था, वे संसाधनों के अभाव में जूझ रहे हैं। गरियाबंद जिले की बात करें तो रेत घाटों की निगरानी के लिए केवल चार कर्मचारी, जिनके पास ना वाहन है, ना ही पर्याप्त साधन। 70 किमी की परिधि में फैले रेत घाटों पर ऐसे में निगरानी कैसे संभव है?

खनिज न्यास की राशि और जनता का हक़ खतरे में- रेत से मिलने वाली खनिज न्यास निधि से कई जनसेवाएं — स्कूल, सड़क, स्वास्थ्य — आश्रित होती हैं। लेकिन इस राशि पर माफिया और सत्ताधारी नेताओं के गुर्गों की नजर है। मलाईदार घाटों पर कब्जा जमाकर उन्होंने इस व्यवस्था को ही अपने फायदे का औजार बना लिया है।

विकास की बुनियाद में दरार- बिना पारदर्शी नीति के रेत का अवैध खनन न केवल राज्य की आय को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि लोगों की जिंदगी, खेत-खलिहान, सड़कें और पर्यावरण भी इसकी चपेट में हैं। आम जनता खुद को ठगा महसूस कर रही है और शासन-प्रशासन का मौन इस ठगी को और बड़ा बना रहा है।

अब सवाल यह है -

क्या सरकार कभी रेत नीति को टेबल से पटल तक लाने का साहस दिखाएगी?

क्या पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी?

क्या प्रदेश की जनता को उनका हक मिलेगा या रेत माफिया हीविकास की नई परिभाषा लिखेंगे?

समाप्ति पर एक सवाल:

अगर सच्चाई दिखाना अपराध है, तो क्या लोकतंत्र अब डर के साए में सांस ले रहा है?

सैमसंग आरएंडडी नोएडा और आईआईटी मद्रास में समझौता: भारतीय भाषाओं के लिए एआई, हेल्थटेक और जनरेटिव एआई पर होगा संयुक्त शोध

गुरुग्राम: सैमसंग आरएंडडी इंस्टीट्यूट, नोएडा (SRI-N) ने इंडस्ट्री और शिक्षा जगत के बीच सहयोग को और मजबूत करते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (आईआईटी, मद्रास) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य संयुक्त अनुसंधान को बढ़ावा देना, तकनीकी विकास को गति देना और भविष्य के लिए तैयार प्रतिभाओं को तैयार करना है। यह सहयोग भारतीय भाषाओं के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, हेल्थटेक और जनरेटिव एआई जैसे उभरते क्षेत्रों पर केंद्रित रहेगा। यह कदम 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' के विज़न के अनुरूप, एक मजबूत नवाचार प्रणाली के निर्माण में सैमसंग की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है। इस पांच वर्षीय समझौता ज्ञापन पर सैमसंग आरएंडडी इंस्टीट्यूट, नोएडा के मैनेजिंग डायरेक्टर क्यांगयून रू और आईआईटी मद्रास के निदेशक प्रो. वी. कमकोटी ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत प्रायोजित शोध परियोजनाएं, परामर्श कार्य, तकनीक हस्तांतरण, प्रशिक्षण, अधोसंरचना विकास और भविष्य में छात्रों के लिए फैलोशिप जैसी कई साझेदार गतिविधियां शुरू की जाएंगी। सैमसंग आरएंडडी इंस्टीट्यूट, नोएडा के मैनेजिंग डायरेक्टर क्यांगयून रू ने कहा, सैमसंग आरएंडडी इंस्टीट्यूट, नोएडा में हम ऐसी तकनीकों पर काम कर रहे हैं जो लोगों और समाज को सशक्त बनाएं। आईआईटी मद्रास के साथ यह साझेदारी हमारे लिए एक अहम कदम है, जिससे हम मिलकर ऐसे समाधान तैयार कर सकें जो सार्थक हों, समावेशी हों और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप हों। हम भारतीय भाषाओं के साथ गैलेक्सीट एआई इकोसिस्टम को और मजबूत बनाना चाहते हैं, ताकि देशभर में भाषा की बाधाएं कम की जा सकें।

केबीसी ग्लोबल लिमिटेड ने पूर्ण स्वामित्ववाली सब्सीडरी कंपनी - धरन इंफ्रा सोलर प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की

रायपुर। नासिक स्थित केबीसी ग्लोबल लिमिटेड (BSE: 541161, NSE: केबीसीग्लोबल), जो इंफ्रास्ट्रक्चर और EPC सेवाओं में अग्रणी है, उसने रिन्युएबल एनर्जी सेक्टर में अपने विस्तार के हिस्से के रूप में एक नई पूर्ण स्वामित्ववाली सब्सीडरी कंपनी, धरन इंफ्रा सोलर प्राइवेट लिमिटेड के गठन की घोषणा की है। 13 जून, 2025 को आयोजित अपनी बैठक में डिरेक्टर बोर्ड द्वारा इस कदम को मंजूरी दी गई। नई कंपनी स्थिरता और ग्रीन एनर्जी के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता के अनुरूप सौर और हाइब्रिड ऊर्जा समाधानों पर ध्यान केंद्रित करेगी और जिसका 100त्न स्वामित्व धरान इंफ्रा-ईपीसी लिमिटेड के पास होगा। धरन इन्फ्रा सोलर प्राइवेट लिमिटेड रिन्युएबल एनर्जी मोडल, सेल और सहायक उपकरण के निर्माण, डिजाइन, विकास, सुधार सहित गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला में शामिल होगा। इसमें अनुसंधान, व्यापार, खरीद, बिक्री, थोक बिक्री, खुदरा बिक्री, वितरण, ईम्पोर्ट - एक्सपोर्ट, संयोजन, निर्माण, मरम्मत, रखरखाव, संशोधन और संचालन शामिल हैं। इसका उद्देश्य सौर ऊर्जा परियोजनाओं और हाइब्रिड सिस्टम - सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए एंड-टू-एंड समाधान प्रदान करना है जो सौर फोटोवोल्टिक प्रौद्योगिकी को ऊर्जा के अन्य रूपों के साथ जोड़ती हैं।

प्रवेश उत्सव के साथ बस्तर में शिक्षण कार्य प्रारम्भ

जगदलपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार और कलेक्टर श्री हरिस एस के मार्गदर्शन में बस्तर जिले में सोमवार को शैक्षणिक सत्र 2025-26 का शुभारंभ बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ किया गया। जिले के समस्त शालाओं में प्रवेश उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों का पारंपरिक रूप से तिलक, फूल-माला पहनाकर एवं सरस्वती वंदना के साथ स्वागत किया गया।

जिला शिक्षा अधिकारी बी.आर.बघेल ने जानकारी देते हुए बताया कि शिक्षा विभाग के द्वारा प्रवेश उत्सव की तैयारी पूर्व में ही कर ली गई थी, जिसमें शालाओं की साफ-सफाई, बच्चों को गणवेश व किताबों का वितरण पहले ही किया जा चुका है, जिसका उद्देश्य सत्र के पहले दिन से ही शिक्षण कार्य कर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके साथ-साथ उन्होंने यह भी कहा कि प्रवेश उत्सव का उद्देश्य बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करना एवं उन्हें विद्यालय से जोड़ना है। जिले की सभी शालाओं में यह उत्सव एक पर्व की तरह मनाया गया। शाला प्रवेश उत्सव में दरभा विकासखंड के माध्यमिक शाला छोटे गूडडूपारा जो वर्ष 2019 से छात्रविहीन था वहां जिला शिक्षा विभाग के द्वारा शिक्षकों और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से 07 बच्चों का कक्षा 6वी में प्रवेश कराया गया जिला मे एक भी विद्यालय शिक्षक विहीन नहीं है इस मौके पर उनके साथ विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी जगदीश पात्र, जनपद सदस्य, सरपंच के अलावा शिक्षक और ग्रामीण उपस्थित थे। इसी प्रकार का आयोजन राजूर ग्राम के विद्यालय में भी किया गया ।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय खंड,
मोहला-मानपुर-अं.चौकी (छ.ग.)
E-mail-eemohla-cg@nic.in

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

नि.सू क्रमांक 05/ निविदा.प्रको./का.अ./ लो.स्वा.यां.खण्ड / 2025 मोहला-मानपुर-अं.चौकी, दिनांक 12.06.2025

सिस्टम कंमाक - 169967
// पंचम निविदा आमंत्रण सूचना //
रिस्क एंड कास्ट

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र 'ए' में जल जीवन मिशन अंतर्गत जल जीवन मिशन अंतर्गत एकल ग्राम/रेट्रोफिटिंग योजनांतर्गत रिस्क एवं कास्ट पर जिला मोहला-मानपुर-अं.चौकी के विकासखंड चौकी के ग्राम ब्राम्हणलांझिया में अधूरे छोड़े कार्य UPVC/HDPE पाईप लाईन जोड़ने बिछाने, उच्चस्तरीय जलागार निर्माण, स्वीच रूम, उच्चस्तरीय जलागार के चारो ओर बाउंड्रीवॉल निर्माण, सबमर्सिबल पंप का प्रदाय एवं स्थापना कार्य, विद्युत विभाग (CSPDCL) से इलेक्ट्रिक कनेक्शन, इलेक्ट्रोक्लोरीनेटर स्थापना, क्लोरीनेटर रूम, घरों एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत नल कनेक्शन प्रदाय आदि एवं अन्य समस्त कार्य, टेस्टिंग, 03 माह का ट्रायल रन, 06 माह तक संचालन संधारण का कार्य (सम्पूर्ण कार्य सामग्री सहित, संलग्न शेड्युल अनुसार) की निविदाए ऑन लाईन पर आमंत्रित की जाती है। जिसकी अनुमानित लागत रू. 25.74 लाख निर्धारित है। उपरोक्त कार्य के निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in से दिनांक 19.06.2025 से डाउनलोड की जा सकती है तथा निविदा डाउनलोड करने की अंतिम दिनांक 03.07.2025 (शाम 5:30 बजे) तक है।

निविदा में जारी एस.ओ.आर. PHE दिनांक 01.06.2020 से लागू एवं संशोधन 02/2020.21 तक तथा PWD 2015 का दिनांक 07.04.2016 से लागू एवं समस्त संशोधन सहित पर तैयार किया गया है।

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड,
मोहला-मानपुर-अं.चौकी (छ.ग.)

जी- 252601560/2

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल रमेन डेका ने आईएएस पूर्वा अग्रवाल का किया सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल रमेन डेका से आज यहां राजभवन में इस वर्ष भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के लिए चयनित रायपुर की सुश्री पूर्वा अग्रवाल ने सौजन्य भेंट की। श्री डेका ने उनको बधाई एवं शुभकामनाएं दी तथा राजकीय गमछा पहनाकर और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। श्री डेका ने कहा कि सुश्री पूर्वा अग्रवाल छत्तीसगढ़ की गौरव हैं। उनकी उपलब्धियों से राज्य के अन्य युवाओं को भी प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर मोहन अग्रवाल, डॉ. अनिता अग्रवाल, आशुतोष सिंघल, शुभम अग्रवाल एवं सुश्री अग्रवाल के अन्य परिजन उपस्थित थे।

जरूरतमंदों के लिए आगे आए रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए 40 हितग्राहियों को सौंपे चेक

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर सांसद एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता बृजमोहन अग्रवाल ने एक बार फिर समाज के जरूरतमंद वर्गों के प्रति अपनी संवेदनशीलता और सेवा भावना का परिचय दिया है। उन्होंने आज 40 हितग्राहियों को स्वास्थ्य एवं शिक्षा सहायता हेतु चेक वितरित किए। इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने कहा कि कहा कि, यह छोटी-छोटी मददें कई बार किसी के जीवन की दिशा और दशा बदल सकती हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में यह सहयोग इन लाभार्थियों को नई आशा और आत्मविश्वास देगा। उन्होंने यह भी बताया कि लाभार्थियों का चयन पूरी पारदर्शिता और पात्रता के आधार पर किया गया है, ताकि सहायता सही व्यक्ति तक पहुँचे और इसका अधिकतम लाभ मिले। इस अवसर पर लाभार्थियों और उनके परिजनों ने सांसद श्री अग्रवाल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सहयोग उनके लिए किसी संजीवनी से कम नहीं है।

छत्तीसगढ़ चर्म शिल्पकार आयोग अध्यक्ष से महिलाओं ने की सीसी रोड बनाने मांग

आरंग (विश्व परिवार)। मंगलवार को बालाजी पुरम कालोनी की महिलाओं ने छत्तीसगढ़ चर्म शिल्पकार विकास बोर्ड आयोग अध्यक्ष एवं वार्ड पार्षद ध्रुव कुमार मिर्धा को वार्ड क्रमांक 15 बालाजी पुरम कालोनी में सीसी रोड बनाने मांग पत्र सौंपा। साथ ही बरसात के पहले वार्ड की नालियों की साफ सफाई कराने की मांग किए। जिस पर ध्रुव कुमार मिर्धा ने जल्द ही गलियों में मुरम व बजरी डलाकर समतल कराने आश्वस्त किया। वहीं वार्ड की समस्यायों को लेकर महिलाओं की पहल की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा जहां नारी शक्ति जागृत हो वहां कुछ भी काम मुश्किल नहीं है।इस अवसर पर बालाजी पुरम कालोनी से श्रीमती खेमीन साहू, श्रीमती सरिता निषाद, श्रीमती राधा साहू, श्रीमती हुलसी साहू, श्रीमती सोनाली साहू की उपस्थिति रही।

एआई समर्थित मुस्कान डिजाइनिंग मध्य भारत का पहला ब्रावा प्लस डेंटल ट्रीटमेंट हुआ डॉ. मिश्रा हॉस्पिटल में

रायपुर (विश्व परिवार)। जन्मजात आड़े-तिरछे दांत हों या किसी दुर्घटना के कारण दंत-पंक्तियों के बिगड़ जाने से आयी विकृति से परेशानियां या मुस्कान का बिगड़ जाना, ऐसी समस्याओं के लिए ब्रावा प्लस, एआई समर्थित आधुनिकतम तकनीक माना जाता है। डॉ. मिश्रा हॉस्पिटल नयापारा, रायपुर स्थित दांतों के अस्पताल में इस तकनीक का सफल प्रयोग किया गया जो मध्य भारत में इस तरह का पहला उपयोग माना गया है।

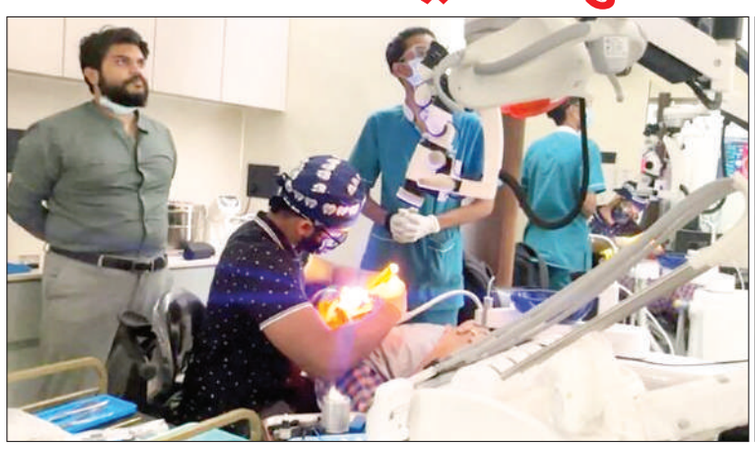

यह कार्य डॉ. हमजा दरगाहवाला, एमडीएस आर्थोडोंटिक्स तथा डॉ. अबीर मिश्रा एमडीएस माइक्रो एंडोडोंटिक्स की टीम ने सफलता से करते हुए रायपुर की दंत उपचार सुविधाओं को नए युग मे पहुंचा दिया है। दांतों में तार बंधवाकर कई महीनों या सालों तक घूमते हुए लोग अक्सर देखे जाते हैं। यह उपचार भी दंत पंक्तियों को सीधा करने के लिए ही किया जाता है पर इसकी तकलीफें बहुत अधिक होती हैं। ब्रावा प्लस में यह उपचार दांतों के पीछे से किया जाता है, जो सामने से दिखाई नहीं पड़ता। इस तकनीक में दांतों की ट्रे बदलनी नहीं पड़ती, बार-बार हॉस्पिटल के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। सौ प्रतिशत इनविजिबल अलाइनमेंट के कारण यह तकनीक दुनिया मे तेजी से लोकप्रिय हुयी है। मध्य भारत, विशेषकर छत्तीसगढ़ में यह सुविधा उपलब्ध ही नहीं थी जिसे अब डॉक्टर मिश्रा हॉस्पिटल नयापारा, रायपुर में डॉक्टर अबीर मिश्रा तथा डॉक्टर हमजा दरगाहवाला द्वारा शुरू किया गया है। इस उपचार से रायपुर के मरीजों को बहुत लाभ और संतुष्टि मिली है। दाँतों में ओवरलेप गैप, कर्व्ड अलाइनमेंट, चबाने या बोलने में दिक्कत, मसूड़ों की बीमारियों से राहत का मार्ग प्रशस्त हुआ है। मुस्कान की कायाकल्प में यह तकनीक बहुत उपयोगी और सुरक्षित है। इसके पहले इनविजिबल आर्थोडोंटिक्स में इनवेसलाइन को सबसे अच्छा माना जाता था लेकिन उसमें बार-बार दांत में लगाने वाली ट्रे बदलनी पड़ती थी। मरीज़ के ट्रे के इस्तेमाल के अधिकतम वक़्त के आधार पर उपचार की सफलता सुनिश्चित होती थी, किसी भी असावधानी से उपचार असफल होने का खतरा मंडराता रहता था लेकिन ब्रावा प्लस के फिक्स एप्लिकेशन होने के कारण मरीज़ को ये दिक्कत नहीं होती। वहीं ट्रे एप्लिकेशन और उपचार प्लानिंग जो पूर्व में सिर्फ थ्री डी डेटा से किया जाता था जिसमें सॉफ्ट टिशू और हार्ड टिशू में मात्र बाहर से दिखने वाले स्ट्रक्चर की जानकारी मिलती थी लेकिन ब्रावा प्लस में थ्री डी एक्सरे (ब्टब्ज) के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग भी किया जाता है जो उपचार की एक्युरेसी को कई गुना बढ़ा देता है। इस तरह ब्रावा प्लस तकनीक में एआई के उपयोग के कारण स्माइल डिजाइनिंग में परफेक्शन बढ़ जाता है तथा मरीज को सुविधा व एक्युरेसी दोनों में मदद मिलती है।

कार्य की गति, नेतृत्व के संकल्प व पार्टी की जन कल्याण नीति से ही बनेगा भारत विकसित राष्ट्र : जसविंदर बग्गा

भारत का जागरूक नागरिक, विकसित भारत 2047 के संकल्प को पूर्ण करने की शपथ दिलाई गई

बोड़ला (विश्व परिवार)। विकसित भारत का अमृतकाल व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्ष के सफल कार्यकाल पूर्ण होने के मौके पर सोमवार को शक्ति केंद्र स्तरीय चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नगर के मंगल भवन में आयोजित इस चौपाल कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष व संकल्प से सिद्धि अभियान के जिला संयोजक जसविंदर बग्गा ने कहा देश को आजादी मिले 75 वर्ष हो गए, जिसका हम अमृत काल महोत्सव मना रहे हैं। इस बीच 60 साल से अधिक कांग्रेस पार्टी ने देश में राज किया। लेकिन पिछले 6 दशकों में भारत को विकसित बनाने, आत्मनिर्भर बनाने, देश को विश्व गुरु बनाने, देश को औद्योगिकी व आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में गति देने का संकल्प किसी ने नही लिया। नतीजा बीमार भारत में महामारी के समय वैक्सीनों के लिए, अकाल के समय खाद्य पदार्थों के लिए, कपड़ों के लिए, देश में प्रौद्योगिकी उत्पादन के लिए, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भारत के नेता विदेशों पर निर्भर थे। या देश को जिन चीजों की आवश्यकता होती थी उन्हें हम भारी कीमत से विदेशों से आयात करते थे। भारत की आर्थिक स्थिति कमजोर हो चुकी थी। श्री बग्गा ने कहा अब हालात बदल गए हैं 2014 से 2025 तक इन बीते 11 वर्षों में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकास कार्यों में गतिशीलता आई है। उन्होंने जो संकल्प लिया उसको सिद्धी तक पहुंचाने के लिए देश की जनता को एक जुट किया।

शहरवासियों को सर्वसुविधायुक्त चौपाटी जल्द समर्पित होगा : चंद्रपकाश चंद्रवंशी

नगर पालिका अध्यक्ष ने किया निर्माणाधीन चौपाटी का निरीक्षण

कवर्धा (विश्व परिवार)। नगर पालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी ने आज नगर पालिका कार्यालय के सामने सर्वसुविधायुक्त नवनिर्मित चौपाटी, स्लैब ढलाई तथा अन्य निर्माणाधीन विकास कार्यों का स्थल निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने को कहा। नगर पालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी ने कहा कि यह सभी कार्य आम जनता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए किए जा रहे हैं सर्वसुविधाययुक्त चौपाटी अब जल्द ही शहर वासियों को समर्पित किया जायेगा। उन्होंने उपस्थित उपअभियंता से निर्माण कार्य में प्रयुक्त सामग्री की गुणवत्ता, कार्य की गति एवं पारदर्शिता के संबंध चर्चा की। उन्होनें कहा कि सभी कार्य निर्धारित समय सीमा के भीतर पूर्ण किए जाएं ताकि नगरवासियों को शीघ्र ही इन सुविधाओं का लाभ मिल सके। चौपाटी नगरवासियों के लिए एक मनोरंजन, विश्राम और सामाजिक मेल जोल का अत्याधुनिक केंद्र बनने जा रही है। उन्होंने कहा कि यह चौपाटी न केवल नगर की सुंदरता में वृद्धि करेगी, बल्कि आमजन के लिए एक सुरक्षित, स्वच्छ और आधुनिक सार्वजनिक स्थल के रूप में विकसित की जा रही है। नगर पालिका के सामने निर्मित चौपाटी में बच्चों के लिए खेल क्षेत्र, आकर्षक लाइटिंग सिस्टम, बैठने की व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल एवं शौचालय की सुविधा, स्थानीय स्ट्रीट फूड के लिए निर्धारित स्टॉल्स लगाये जायेगा। इस चौपाटी से नागरिकों के लिए मनोरंजन के साथ शहर की पहचान भी बनेगा।

माना सिविल अस्पताल अब बदहाल, गिर रही टाइल्स, कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा

रायपुर (विश्व परिवार)। 10 करोड़ से अधिक की लागत से बने रायपुर के माना सिविल अस्पताल की हालत इन दिनों बेहद खराब हो गई है। अस्पताल की टाइल्स जगह-जगह से निकलकर गिर रही हैं, जिससे किसी बड़ी दुर्घटना की आशंका बनी हुई है। यह अस्पताल लगभग 10 साल पहले बनाया गया था और अब इसकी दीवारें और फर्श जर्जर हो चुके हैं।

आप को बता दे कि माना सिविल अस्पताल में न केवल माना कैंप के लोग इलाज के लिए आते हैं, बल्कि आसपास के करीब दो दर्जन गांवों के मरीज भी इसी अस्पताल पर निर्भर हैं। यहां तक कि एयरपोर्ट, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल, बटालियन, बालगृह और अन्य सरकारी संस्थानों के कर्मचारी भी स्वास्थ्य सेवाओं के लिए इसी पर भरोसा करते हैं।

अस्पताल में हाईटेक आई हॉस्पिटल भी है, जो दूर-दराज के मरीजों को भी आकर्षित करता है। यहां नेत्र रोगों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन भवन की खस्ताहाल स्थिति मरीजों और स्टाफ दोनों के लिए खतरा बनती जा रही है।

अस्पताल प्रभारी ने इस समस्या को लेकर अपने उच्च अधिकारियों को पहले ही अवगत करा दिया है। हालांकि अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई है। स्थानीय लोगों में नाराजगी है कि करोड़ों की लागत से बनी स्वास्थ्य सुविधा का यह हाल क्यों हो रहा है। माना सिविल अस्पताल की दुर्दशा यह सवाल उठाती है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे की देखरेख और मरम्मत को लेकर प्रशासन कब जागेगा?

राष्ट्रीय सम्मेलन में युवाओं की चमकः बेस्ट पेपर प्रेजेंटर का खिताब रायपुर के परमेश थानवी को मिला

रायपुर (विश्व परिवार)। समर्थ-Uniting Visionaries, Transforming Tomorro2 थीम पर आधारित सीए स्टूडेंट्स का राष्ट्रीय सम्मेलन, इस वर्ष भी सफलता की नई ऊँचाइयों को छूता नज़र आया। इस वर्ष का यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम CICASA रायपुर द्वारा आयोजित किया गया, जिसका संचालन CICASA चेयरमैन सीए ऋषिकेश यादव के नेतृत्व में किया गया। सम्मेलन में देशभर के प्रतिभावान छात्रों ने अपने-अपने विषयों पर तकनीकी सत्रों में प्रस्तुति दी, जहाँ चार तकनीकी सत्रों के विजेताओं के साथ-साथ 'सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रेजेंटर' का प्रतिष्ठित खिताब भी घोषित किया गया।

इस बार बेस्ट पेपर प्रेजेंटर का खिताब रायपुर HNA शाखा के परमेश थानवी को उनके विषय 'डिजिटल डॉक्युमेंटेशन-फिजिकल फाइल से पेपरलेस ऑडिट रूम तक' पर प्रभावशाली प्रस्तुति के लिए प्रदान किया गया। उन्होंने अपने व्यावहारिक उदाहरणों, इंटरैक्टिव शैली और सजीव प्रजेंटेशन के ज़रिए यह बताया कि डिजिटल डॉक्युमेंटेशन का अर्थ सिर्फ़ गूगल ड्राइव में फ़ाइल स्टोर करना नहीं, बल्कि ऐसा सिस्टम बनाना है जिससे ऑडिट का काम तेज़, साफ़ और भरोसेमंद हो सके। उन्होंने यह भी दर्शाया कि कैसे आधुनिक टूल्स जैसे GST Zen, CaseWare और ICAI द्वारा बनाए गए डॉक्युमेंट मैनेजमेंट मॉड्यूल जैसे संसाधनों से हम ऑडिटिंग को स्मार्ट, स्ट्रक्चर्ड और स्ट्रेस-फ्री बना सकते हैं।

सम्मेलन को चार तकनीकी सत्रों में विभाजित किया गया था, जिनमें हर एक सत्र से एक-एक श्रेष्ठ प्रेजेंटर का चयन किया गया-

तकनीकी सत्र 1: सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग का ऑडिट विषय पर शानदार प्रस्तुति के लिए जयेश पुरवार को सम्मानित किया गया। तकनीकी सत्र 2: डिजिटल एश्योरेंस जैसे आधुनिक विषय को सरल और व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने के लिए मानस जोशी को पुरस्कृत किया गया। तकनीकी सत्र 3: इक्विटी और फंडिंग जैसे वित्तीय विषय को गहराई से समझाने के लिए रश्मीत कौर को विजेता घोषित किया गया। तकनीकी सत्र 4: इनकम टैक्स बिल 2025 पर अद्भुत विश्लेषण और प्रस्तुति के लिए आर्ची गोयल को सम्मानित किया गया।

इजरायल द्वारा गाजा पर किए जा रहे हमलों की 5 वामपंथी दलों ने की निंदा

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। जंतर मंतर - सीपीआई (एम), सीपीआई, सीपीआई (एमएल) एल, आरएसपी और फॉरवर्ड ब्लॉक- पांच वामपंथी पार्टियां ने सोमवार को 17 जून को फिलिस्तीन के साथ एकजुटता के राष्ट्रीय दिवस के रूप में देखा, क्योंकि यह दृढ़ता से गाजा में लोगों के खिलाफ इजरायल सरकार द्वारा चल रहे नरसंहार युद्ध की निंदा की।

हम गाजा में फिलिस्तीनी लोगों के खिलाफ इजरायली सरकार द्वारा छेड़े जा रहे नरसंहार युद्ध की कड़ी निंदा करते हैं। पिछले बीस महीनों से इजरायल की लगातार बमबारी और सैन्य आक्रमण में 55, 000 से अधिक फिलिस्तीनी मारे गए हैं- जिनमें से अधिकांश महिलाएं और बच्चे हैं। आवश्यक बुनियादी ढांचे, अस्पतालों, स्कूलों और शरणार्थी आश्रयों को जानबूझकर निशाना बनाया गया है, जिससे गाजा के लोग अभूतपूर्व मानवीय तबाही की ओर बढ़ रहे हैं। यह नरसंहार से कम नहीं है। सबसे अमानवीय बात यह है कि इज़राइल गाजा में सहायता के प्रवेश से भी इनकार कर रहा है।

हम अंतर्राष्ट्रीय जलक्षेत्र में फ्रीडम फ्लोटिला गाजा के मानवीय जहाज मैडलीन पर इजरायल के हमले की भी निंदा करते हैं। हम भारत सरकार से आग्रह करते हैं कि वह हिरासत में लिए गए सभी अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवकों की रिहाई की मांग करे, गाजा को निर्बाध मानवीय सहायता सुनिश्चित करे तथा अमानवीय घेराबंदी को तत्काल समाप्त करने का आह्वान करे।

संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय सहित बढ़ते वैश्विक आक्रोश के बावजूद, नेतन्याहू सरकार ने संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके कुछ सहयोगियों के समर्थन से, बिना किसी दंड के अपना क्रूर अभियान जारी रखा है। राफा पर हाल ही में हुआ हमला, जिसके कारण पहले से ही विस्थापित लाखों फिलिस्तीनी एक बार फिर विस्थापित हो गए हैं, इजरायल सरकार की अंतर्राष्ट्रीय कानून, मानवाधिकारों और बुनियादी मानवता के प्रति घोर उपेक्षा को दर्शाता है।

-कमल नयन नारंग

केवीआईसी ने पीएमईजीपी के अंतर्गत देशभर के 11,480 सेवा क्षेत्र के लाभार्थियों को करीब 300 करोड़ रुपये से अधिक की मार्जिन मनी सब्सिडी संवितरित की

- केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने नई दिल्ली स्थित राजघाट कार्यालय से ऑनलाइन माध्यम से लाभार्थियों को सब्सिडी जारी की
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पीएमईजीपी योजना ने गांव-गांव तक रोजगार और आत्मनिर्भरता का आधार मजबूत किया है : मनोज कुमार

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (क्रूल्धत्लक्क) के अंतर्गत 17 जून 2025 को एक वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से देशभर के 11,480 सेवा क्षेत्र (Service Sector) के लाभार्थियों को करीब 300 करोड़ रुपये की मार्जिन मनी सब्सिडी का संवितरण किया। यह संवितरण लगभग 906 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृति के सापेक्ष किया गया। यह आयोजन नई दिल्ली स्थित राजघाट कार्यालय से सम्पन्न हुआ, जहां से केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने अपनी टीम के साथ ऑनलाइन माध्यम से लाभार्थियों के बैंक खातों में यह सब्सिडी स्थानांतरित की। कार्यक्रम में केवीआईसी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री रूप राशि सहित वरिष्ठ अधिकारी मुंबई से वर्चुअल माध्यम से उपस्थित रहे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में अध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'आत्मनिर्भर और विकसित भारत' का सपना साकार हो रहा है और पीएमईजीपी योजना उसका मजबूत स्तंभ बन चुकी है। उन्होंने कहा कि यह योजना केवल आर्थिक सहायता प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन बन गई है जो लाखों युवाओं, महिलाओं और कारीगरों को स्वरोजगार और उद्यमिता से जोड़ रही है। गांव-गांव तक रोजगार और आत्मनिर्भरता के निर्माण में इस योजना की भूमिका निर्णायक रही है।

इस व्यापक संवितरण में देश के सभी छह अंचलों की सक्रिय भागीदारी रही। केंद्रीय जोन के अंतर्गत उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड की कुल 2403 परियोजनाओं के लिए करीब 72 करोड़ रुपये की सब्सिडी वितरित की गई, जिनके लिए कुल 218 करोड़ रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ। पूर्वी जोन में बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की 996 परियोजनाओं को करीब 22 करोड़ रुपये की सब्सिडी प्राप्त हुई, जबकि ऋण स्वीकृति करीब 71 करोड़ रुपये रही। उत्तर भारत के राज्यों- पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, राजस्थान और केंद्र शासित चंडीगढ़ के अंतर्गत कुल 2713 परियोजनाओं को करीब 61 करोड़ रुपये की सब्सिडी दी गई और इन परियोजनाओं के लिए 184 करोड़ रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ। पूर्वोत्तर क्षेत्र की 81 परियोजनाओं को करीब 2 करोड़ रुपये की सब्सिडी प्राप्त हुई, जिसमें असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा जैसे राज्य शामिल रहे।

दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी में 4565 परियोजनाओं को शामिल करते हुए करीब 116 करोड़ रुपये की सब्सिडी वितरित की गई, जबकि इन परियोजनाओं के लिए 343 करोड़ रुपये से अधिक का ऋण स्वीकृत किया गया। पश्चिम जोन के महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा राज्यों की कुल 722 परियोजनाओं के लिए 26 करोड़ रुपये से अधिक की सब्सिडी वितरित की गई, जो 82 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृति के सापेक्ष है।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) जब से शुरू हुआ है तब से लेकर वित्त वर्ष 2024-25 तक ग्रामीण और शहरी भारत में उद्यमिता और आत्मनिर्भरता का स्तंभ बन चुकी है। योजना के अंतर्गत अब तक कुल 10,18,185 सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना की जा चुकी है।

SAMVAD- 44221/1